तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स २.०० रुपये
अंक : ८ वर्ष : १८ १५ अप्रैल १९८२

दीवाना

हास्य विशेषांक



कुछ बिस्कुट्स केवल स्वादी ही नहीं होते

वे उदास चेहरे को मुस्कराहट से भर भी सकते हैं



स्वादी

ग्लूकोस बिस्कुट

हमारी अन्य किस्में

- कोकोनट कुकी
- ओरेन्ज क्रीम
- कस्टर्ड क्रीम
- बोरबोन क्रीम
- सलोना-सालटीन
- क्रिस्पी, सेवोरी
- स्टार

स्वादी जीवन के खुशी के क्षणों का एक स्वादमय साथी

व्यापारिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें

आर्यावर्त ओवरसीज (प्रा०) लिमिटेड

7/35, दरियागंज, अंसारी मार्ग नई दिल्ली-110002 फोन : 266197, 277626 Cable आर्यावर्तम्

डायमण्ड कॉमिक्स में



हंसा हंसाकर लोटपोटकर देने वाला
कार्टूनिस्ट '**प्राण**' का जीवन्त चरित्र
'चाचा चौधरी'
चाचा चौधरी का दिमाग कम्प्यूटर से भी
ज्यादा तेज चलता है और बलशाली साबू
ज्यूपिटर का प्राणी है। चाचा चौधरी का
दिमाग और साबू की शक्ति हमेशा दूसरों
की भलाई के लिये प्रयोग की जाती है।
इनके कारनामें मनोरंजन के साथ साथ शिक्षाप्रद भी हैं!

चाचा चौधरी और बोतल का जिन्न

मू॰ 3/-

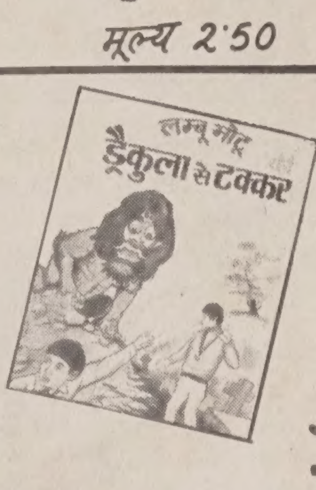


अंकुर के केवल तीन अकों ने
बाल पत्रिकाओं की दुनियाँ में तहलका
मचा दिया है! **डायमंड कामिक्स**
की नन्हें मुन्नों के लिये एक अनूठी पत्रिका
जिसमें आप हर माह पढ़ेंगे अपने जाने पहचाने
चरित्रों के रहस्यमय, रोचक रंगबिरंगे
चित्रों से भरपूर नये नये कारनामें!

अंकुर – 4

मूल्य 2·50

दो युवा जासूसों की दिल हिला देने वाली कहानी



लम्बू मोटू की ड्रैकुला से टक्कर

मूल्य 3/-

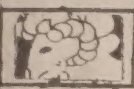
अपने निकट के बुक स्टाल से खरीदें!

डायमण्ड कॉमिक्स 2715 दरियागंज, नई दिल्ली-110002

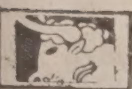

लल्लू
जैसे मैं कह रहा था . . .यह अब की बात नहीं है। बचपन से ही पता नहीं क्या बात है मेरे साथ उल्टी ही बात होती चली आ रही है। मां मेरे लिये खीर बनाती है तो उसमें गल्ती से चीनी की बजाये नमक डाल देती है.
तुम्हारी बातें सुनकर मुझे बड़ी हंसी आती है। हो तुम बड़े इंटरेस्टिंग आदमी।
जानती हो जब मैं पैदा हुआ था, तब क्या हुआ था ? अजीब बातों की शुरुआत तो वहीं से हुई थी।
डाक्टर साहब देखो यह कैसा बच्चा पैदा हुआ है। हंस रहा है। और बच्चे पैदा होते ही रोते हैं और यह जोर-जोर से हंस रहा है।
ऐसा केस तो हमारे सामने पहले कभी नहीं आया। इसके ग्लैंडस में कहीं खराबी लगती है। डाक्टर माथुर को यह केस दिखाओ।
हे भगवान! मेरे घर में यह पोता कैसा पैदा हुआ जो पैदा होने पर हंस रहा है। और हमें रोना आ रहा है।
जब यह पेट में था तभी मुझे शक होने लग गया था। बहू खट्टी चीज मांगने की बजाय मीठी चीजें मांगती रहती थी।
जब मैं पढ़ता था तो तीसरी में लगातार चार बार फेल हुआ। जब भी फेल होने का समाचार मम्मी और डैडी को सुनाता अचानक कोई न कोई ऐसी बात हो जाती कि दोनों को जोर की हंसी आती और हंसते-हंसते लोटपोट हो जाते। पांचवी बार पास हुआ तो दोनों को गुस्सा आया और मेरी पिटाई हो गयी।
ही ही ही ही! इससे तो लगता है कि जब तुम मरोगे तो तुम्हारे साथी तुम्हारी शोक सभा में हास्य कवितायें पढ़ेंगे और जोक्स सुनायेंगे। हो सकता है जब तुम्हारी अर्थी जा रही होगी तो अर्थी उठाने वालों में से पीछे से किसी की पैंट फट जाये और सब लोग हंसते-हंसते तुम्हें शमशान ले जायें।
तुम मुझे लल्लू ही समझते हो। लेकिन लड़कियों को हंसाना बड़े काम की चीज है। अभी मैंने जो बातें कहीं उनमें से कई मनगढन्त थीं। मैं तो बस लीना को हंसा कर खुश करना चाहता था वह
मेरी बातों पर फिदा हो गयी और शादी का मेरा प्रयोजन मान ही लेगी।
यह क्या ? लीना लैटर में लिखती है, ''डियर लल्लू' मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती, जो बातें तुमने मुझे बताई उससे मुझे लगता है कि अगर मैं मान गयी तो पंडित गलती से हमारी शादी की डेट ऐसी रखेगा तुम बरात लेकर मेरे घर आओगे तो तुम्हें पता लगेगा उस दिन तो राखी का त्यौहार है। और मुझे राखी ही पहनानी पडेगी। मैं अपना मजाक नहीं बना सकती.''

आपका भविष्य

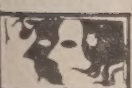
पं॰ कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं॰ हंसराज शर्मा



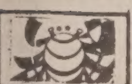
मेष : परिवार से सुख, सेहत नरम, लाभ खर्च बराबर, परिश्रम अधिक, यात्रा सफल, झगड़े आदि से परेशानी, काम देर से या रुक कर बनेंगे, कारोबार में उन्नति, लाभ बढ़ेगा, घरेलू योजनाओं पर व्यय अधिक होगा।



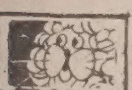
वृष : व्यय अधिक, कारोबार मध्यम, यात्रा हो सकती है, कोई विशेष सूचना मिलेगी, कारोबार से यथार्थ लाभ, मित्र सहयोग से काम चलेगा, दौड़धूप अधिक, घरेलू चिन्ता बनेगी, कारोबार सुधरेगा, लाभ में वृद्धि



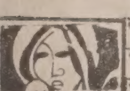
मिथुन : मनोरंजन आदि पर खर्च, आय यथार्थ, कारोबार में सुधार, घरेलू खर्च ज्यादा, आय में वृद्धि, सुस्ती का प्रभाव, कारोबार से अच्छा लाभ, ऋण के कामों में परेशानी, यात्रा सावधानी से करें।



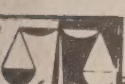
कर्क : अफसरों से मेल-जोल, लाभ यथार्थ, अकारण वैर-वरोध से परेशानी, कामों में बाधा, लाभ अच्छा होगा, राजपक्ष से परेशानी अन्य हालात सुधरेंगे, शत्रु पर विजय, कोरोबार से यथार्थ लाभ, कोई विशेष काम बनेगा



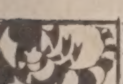
सिंह : स्वभाव में गुस्सा, काम देर से बनेंगे, लाभ अच्छा पर मिलेगा देर से, अधूरा काम बनेगा, करोबार बढ़ेगा, परिश्रम सफल, झगड़े से बचें, अफसरों से मेल-जोल, यात्रा सफल मित्र सहयोग देंगे, कारोबार से अच्छा लाभ



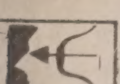
कन्या : व्यय यथार्थ, चिन्ता व्यर्थ में ही लगी रहेगी, आर्थिक परेशानी दूर होगी, परिवार से सुख, धार्मिक कामों में रुचि, बिगड़े काम बनते नजर आएंगे, व्यापार में उन्नति, संघर्ष भी काफी रहेगा।



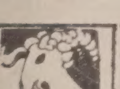
तुला : शारीरिक कष्ट या सुस्ती छाई रहेगी, लाभ यथार्थ, वातावरण सुधरेगा, परिश्रम द्वारा सफलता नसीब होगी, आमदनी अच्छी व्यय भी बढ़ेगा, यात्रा सफल, दौड़धूप अधिक बड़ों की ओर से चिन्ता।



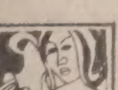
वृश्चिक : दिन ठीक नहीं सावधानी से रहें, यात्रा न करें. महत्वपूर्ण कारोबार बढ़ेगा, हालात भी सुधरेंगे, यात्रा में कष्ट या परेशानी, अफसर सहयोग से काम बनेंगे, लाभ अच्छा होगा, हालात ठीक होते जाएंगे।



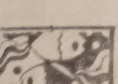
धनु : कामकाज का बोझ काफी रहेगा, लाभ बढ़ेगा, आय यथार्थ, यात्रा में सुख, हालात भी सुधरेंगे, धार्मिक कामों में रुचि एवं व्यय, अजनबी लोगों से बचें, चोट लगने का भय है, भाग्य साथ देगा, परिश्रम अधिक।



मकर : मनोरंजन आदि में समय अच्छा गुजरेगा, व्यय बढ़ेगा. संघर्ष काफी रहेगा, व्यर्थ की चिंता बनेगी, आय में वृद्धि, कामकाज का बोझ बढ़ेगा, धर्म-कर्म में रुचि, सेहत खराब, यात्रा हो सकती है।



कुम्भ : यात्रा न करें, आय यथार्थ, कारोबार सुधरेगा, यात्रा सफल, व्यय बढ़ेगा, मित्र सहयोग देंगे, आमदनी अच्छी पर मिलेगी देर, से ऋण आदि के कामों में परेशानी, नई वस्तुओं की खरीद पर व्यय



मीन : सुस्ती का प्रभाव बढ़ता रहेगा, आय व्यय समान, कारोबार ठीक चलेगा, शुभ अशुभ मिश्रित फल मिलेंगे, दौड़धूप अधिक, अधूरे काम बनते दिखाई देंगे, स्वभाव में गुस्सा रहेगा, आय में वृद्धि, घरेलू [illegible]



दीवाना का होली अंक ५ रंगों से भरपूर प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ तो देखते ही हंसी आ गयी। ऐसा पोस्टर आज तक कहीं भी देखने को नहीं मिला। होली का भूत कहानी पढ़ कर तो ऐसा लगा कि ऐसी कहानी का ही अब तक इन्तजार था। राजा जी, रंगोली, रंग बदरंग, लल्लू और भंग फूफाइटिंग, होली के नये रंग तथा खास पेश सिलबिल पिलपिल होली खटिया खड़ीकर लाल की तो काबिल-ए-तरीफ थी।

—गुरमीत सिंह मीता (नयी दिल्ली-४१)

लगभग ६ वर्षों से मैं दीवाना का नियमित पाठक हूं इतने समय से लगातार पाठक बने रहने का कारण है कि मैं जो पसन्द करता हूं वह मुझे केवल दीवाना में ही मिलता है।

नया अंक आते ही खरीद लाया और पूरा पढ़ डाला। इस अंक की पूरी सामग्री एकदम बढ़िया थी ५-६ अंकों में काका के कारतूस नहीं प्रकाशित हुए क्या कारण है। कृपया इन्हें जरूर प्रकाशित किया करें। राणा जी बहुत ही अच्छा फीचर है आशा है ये पूरा हमारा मनोरंजन करता रहेगा।

—राजेन्द्र सिंह बेदी, सितारगंज

आज ही दीवाना का १५ मार्च, का नया अंक मिला। पढ़कर मजा आ गया। खासकर एशियाई खेलों की दीवानी पब्लिसिटी ने बहुत मनोरंजन किया। इसके अलावा परोपकारी जी भी अच्छे थे।

—जगबीर राठी जीन्द (हरि.)

अब तो मैं आपके इस मैगजीन की तारीफ करते-करते ही थक गया हूं। हर नए अंक को पढ़ कर ही सांस लेता हूं। इस पत्रिका में बच्चों के लिए जितना साज सामान है, युवा वर्ग के लिए भी उतना ही साज सामान है। जो भी दीवाना पढ़े इसका दीवाना हो कर रह जाए। आजकल के इस महंगाई के जमाने में भी इतने कम पैसे में इतना सारा सामान असंभव सा लगता है। इस पत्रिका पर दूर के ढोल सुहावने वाली लोकोक्ति असर नहीं खाती क्योंकि इसे पाते ही दोनों हाथों में लड्डू से लगते हैं।

—रीची प्रहार, बीकानेर

दीवाना का अंक नं॰ ४ मिला। हर बार की तरह इस बार भी उम्मीद से ज्यादा अच्छी सामग्री मिली। इस अंक में सबसे ज्यादा "कहावतें और मुहावरे" पसन्द आयीं। बाकी फीचर जैसे 'व्हीलर किस्सा", "मोटू-पतलू", "परोपकारी" और 'लल्लू' भी लाजवाब थे। नया फीचर "राजा जी" इतना अच्छा नहीं था।

कुल मिलाकर पत्रिका इतनी अच्छी थी कि उस के सामने १.५० रु. कुछ भी नहीं। अगले अंक का जल्द इन्तजार है।

—नरेन्द्र, कानपुर

दीवाना अंक चार मिला मुख पृष्ट देख कर बेहद हंसी आई कि मुझे दीवाने का दीवाना बनना पड़ा। अब मैं दीवाने का इतना दीवाना हो गया हूं की अब दीवाना पढ़े वैगर नींद ही नहीं आती। यह बेहद रोचक और ज्ञानवर्धक होता है। आने वाले अंक का बेहद जोरो शोरों से इंतजार है।

—एम॰ एम॰ गुजराल, करनाल

*

मुख पृष्ठ पर

सब खड़े हैरान
देख अजीब नजारा
आंखें बन्द पट्टी से
मुंह ढक लिया सारा।
घसीटा पूछे झटके से
यह क्या है लाला
मुझको तो लगता है
कुछ दाल में काला ॥

अंक ८ वर्ष : १८ १५ अप्रैल १९८२

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा : २७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक : १४ रुपये
एक प्रति : १.५० रुपये

खजाने की तलाश



मूल : शकील अनवर
अनु : तरनजीत

बात मजाक की थी, शज्जी की उम्मीद भी न थी कि मजाक ही मजाक में बात इतनी बढ़ जायेगी वरना वह इतना गंभीर मजाक कभी न करता।

उस रोज शाम को वह सबके साथ इमली वाले खण्डहर में चोर-सिपाही वाला खेल खेल रहा था। एक बार जब मतीन चोर बनने लगा तो उसी ने बात छेड़ी।

''तुमने कभी कोई ऐसी किताब पढ़ी है जिसमें किसी डाकू ने अपने खजाने का जिक्र किया हो?''

''मैंने सुल्ताना डाकू की सुरंग के बारे में तो पढ़ा है, खजाने के बारे में नहीं ''शज्जी ने उसकी आंखों पर पट्टी बांधते हुए जवाब दिया।

''वैसे यह डाकू भी होते खूब थे''—मतीन ने आंखों पर बंधी हुई पट्टी को जरा ढीला करने की कोशिश की और बोला—''अब देखो ना, हर डाकू अपना खजाना किसी न किसी गुफा में छुपा कर रखता था और वहां तक पहुंचने के लिए गुप्त नक्शा भी बनाता था।''

''और जिसके पास वह नक्शा होता था वही उस खजाने का मालिक होता था।'' शज्जी ने उसकी बात काटी और जल्दी से बोला—''ये अपने चचा इकबाल हैं ना, इनके पास भी एक खजाने का नक्शा है'' वह शरारत से मुस्कराया।

''अच्छा!'' मतीन आश्चर्य से उछल पड़ा। उसने जल्दी से अपनी आंखों पर बंधी पट्टी खोल डाली। उसकी आंखों से आश्चर्य झलक रहा था।

''एक दिन चचा इकबाल बता रहे थे कि उनके पास एक खजाने का गुप्त नक्शा है,'' शज्जी को अपनी शरारत पर मजा आ रहा था,'' और मजे की बात यह है कि यह नक्शा भी किसी डाकू का ही है।''

''किस डाकू का?'' मतीन की उत्कंठा जाग उठी।

''अरे होगा कोई सुल्ताना-वुलताना. खजाना किसी का भी हो—खजाना ही होता है।''

''अच्छा तो खजाने को चचा ने निकला क्यों नहीं।''

''भई अब ये तो वही जानें। हां एक दिन वह बता रहे थे कि उन्होंने किसी लोहे के बक्स बनाने वाले कारखाने को सैकड़ों बड़े-बड़े सन्दूक बनाने का ऑर्डर दिया हुआ है।''

''सैकड़ों सन्दूक!'' मतीन की आंखें फिर आश्चर्य से फैल गयीं,'' इतने सारे सन्दूकों का क्या करेंगे?'

''खजाना रखेंगे भई!'' शज्जी कुछ और भी कहता कि इतने में दूसरे साथी वहीं आ गये। वह खड़े खड़े मतीन की आंखों पर पट्टी बांधे जाने का इन्तजार कर रहे थे। शज्जी ने पट्टी बांधी और खेल शुरू हो गया।

शज्जी समझा था कि छोटा-मोटा झूठ शरारत में बोला जाये तो कोई एतराज की बात नहीं लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि कभी-कभी छोटा-मोटा झूठ ही किसी बड़ी बात की बुनियाद बन जाता है। उस रोज मतीन रात भर अपने बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। उसे नींद नहीं आई। रह-रहकर खजाने और उसके नक्शे का ख्याल उसे आता रहा। वह सोचता रहा कि अगर खजाने का नक्शा उसके हाथ लग जाये तो मजा आ जाये। मगर चचा इकबाल वह नक्शा उसे क्यों देने लगे? वह सोचता रहा और फिर उसे एक तरकीब सूझ ही गई।

अगले दिन स्कूल जाते वक्त उसने शज्जी से उस नक्शे का जिक्र छेड़ दिया। उस वक्त साजिद और अरशद भी साथ थे। उन दोनों को कल मतीन ने नक्शे वाली बात बता दी थी। वह दोनों भी नक्शा हासिल करना चाहते थे।

''शज्जी! चचा इकबाल के सन्दूक कब तक बन कर आ जायेंगे?''

''अरे उनकी एक ही कही। हो सकता है सन्दूकों का इन्तजार किये बगैर ही वह खजाना निकाल लायें और यह भी हो सकता है कि वह खजाना कभी न निकालें बल्कि सन्दूकों में अपनी किताबें, कपड़े और कूड़ा करकट भर दें।''—शज्जी ने लापरवाही से जवाब दिया।

''मतलब यह कि उन्हें इस खजाने से ज्यादा दिलचस्पी नहीं?''

''अब तुम्हीं देखो अगर दिलचस्पी होती तो खजाना कभी का निकाल लेते और अब तक हमारा घर महल बन जाता।''

''तुम भी निरे बुद्धू हो शज्जी''—अचानक मतीन का लहजा बदल गया।

''क्यों? इसमें बुद्धूपन की क्या बात है?''

शेष पृष्ठ ८ पर

हंसना मना है

पुलिसमैन एक छोटे से लड़के को घसीट कर लिये जा रहा था लड़का हाथ में क्रिकेट बैट कस कर पकड़े था। जाते-जाते राह में उन्हें लड़के के कुछ छोटे-छोटे दोस्त दिखाई दिये। ''अरे तुमने क्या किया है?'' उनमें से एक ने पूछा! ''कुछ भी नहीं,'' लड़का बोला, ''मुझे पुलिस की क्रिकेट टीम में खेलने के लिये आमन्त्रित किया गया है''

●

''बर्थ कन्ट्रोल में विश्वास न करने वाले को क्या कहते हैं?
''डैडी''!

●

मेरे पति ने हमारे विवाह पर संसार मेरे कदमों पर ला देने का वादा किया था। अब मेरे ग्यारह बच्चे हैं। वादा उन्होंने काफी हद तक पूरा कर दिखाया।

●

सूर्य ने चन्द्रमा से पूछा— ''आज तुम इतने पीले क्यों दिखाई दे रहे हो?''
चन्द्रमा— ''ओह! मैं सदा रात की शिफ्ट में काम करता हूं न?

●

एक सेठ जी की आंख नकली थीं, पेट के बल लेटे पड़े थे। डाक्टर ने उनकी आंख के पास उंगली हिलाई और कहा, 'ये मर गया है। सेठ जी बोले 'लेकिन मैं तो जिन्दा हूं।'' नर्स बोली 'चुप! डाक्टर जी विलायत पलट हैं ये क्या झूठ बोलते हैं।

●



पक्षियों के दिमाग—

साधारणतया समझा जाता है कि पक्षियों की आंखें केवल उनके देखने का कार्य करती हैं, परन्तु पक्षियों की आंखें देखने के अलावा भी काम करती हैं।

उड़ते समय पक्षियों की आखों से टकराने वाली हवा, उनकी आंखों के पानी को सुखा देती है जिससे पास की नाड़ी में रक्त ठंडा हो जाता है।

इज़राईल के एक खोजकर्त्ता जो बेन गुरियन विश्वविद्यालय से सम्बन्धित हैं के अनुसार यह रक्त जो कि पक्षी की vein में होता है, दिमाग में दौरा कर पक्षी के दिमाग की दूसरी (arterial) रक्त नाड़ियों के रक्त को ठंडा करता है, जिसके फलस्वरूप दिमाग का तापमान कम रखना पड़ता है अन्यथा उनके शरीर के नरवस सिस्टम के नष्ट होने का डर होता है।

यह प्रमाणित करने के लिये कि यह तापमान घटने का कार्य पक्षियों के शरीर में होता है खोजकर्त्ता ने एक परीक्षण किया। एक कबूतर के सर पर एक प्लास्टिक का लिफाफा ढक दिया गया केवल उसकी आंखें खुली रखीं। इस पक्षी का शारीरिक तापमान बढ़ाने पर देखा गया कि जब तक कबूतर की आंखों को हवा लगती रहीं उसका दिमाग ठंडा रहा, परन्तु आंखें ढकने के साथ ही उसके दिमाग का ताप बढ़ गया।

जाने-माने बबल्स जूते



★ हर अवसर व हर जरूरत के लिये असली बबल्स जूते बेहतरीन चमड़ व लचकदार रबड़ के तले से बनाये जाते हैं।
★ बबल्स जूते देखने में आकर्षक व चलने में आरामदेह एवं टिकाऊ होते हैं।
★ बच्चों एवं सभी उम्र के पुरुषों के लिये सभी साईजों व रंगों में उपलब्ध।
★ हर कसौटी पर खरे उतरने वाले।

सम्पूर्ण भारत में मुख्य-जूता विक्रेता एवं खेल सामग्री विक्रेताओं के यहां उपलब्ध।

bse
BABALS SUNNY ENTERPRISES An Ex-Serviceman concern
D-133, OKHLA INDUSTRIAL AREA, PHASE-I NEW DELHI-110020
PHONE-637133

पृष्ठ ६ से आगे

''अरे जब उन्हें खजाने में दिलचस्पी नहीं है तो तुम उनसे नक्शा क्यों नहीं ले लेते।''

शज्जी ने एक नजर उसकी तरफ देखा फिर बोला, ''यही तो मुसीबत है। मैंने एक बार कोशिश भी की थी मगर वह नक्शा उन्होंने न जाने कहा रखा है कि तलाश के बावजूद भी मुझे नहीं मिल सका।''

''किसी किताबों वाली अलमारी में छुपा होगा''—साजिद ने राह दिखाई।

'उस रोज एक ही किताब खोलकर तो देख पाया था और आज कल तो वह अपने कमरे में ही रहते हैं इसलिये मौका ही नहीं मिलता। ''—शज्जी ने बेजारी से एक लम्बी सासं ली।

''ओह—'' मतीन सोचने लगा, ''अच्छा अगर तलाश किया जाये तो मिल जायेगा न?''

''मिलेगा क्या नहीं? भला तलाश करो और न मिले?''

''फिर ऐसा करेंगे चचा इकबाल जब कहीं बाहर गये हुए हों तो उनके कमरे की तलाशी ली जायें।''

''भई वह कहीं जाते भी तो नहीं।''

''दोपहर में सोते तो होंगे।''

''अरे हां'' शज्जी ने चुटकी बजाई, ''दोपहर में तो वह ऐसी लम्बी तान कर सोते हैं कि कान पर नगाड़े भी बजाओ तो भी न उठें।''—वह शरारत से मुस्कराया।

''बस तो फिर क्या है? हम सब चुपके से उनके कमरे में दाखिल होकर नक्शा तलाश करेंगे। एक और चार में तो बड़ा फर्क होता है ना।''

रास्ते भर शज्जी उनकी हां में हां मिलाता रहा मगर उसके हाथों के तोते ज़रूर उड़ गये। उसे क्या पता था मि. मतीन पंजे झाड़ कर उसके पीछे पड़ जायगा। अब सवाल यह था कि चचा इकबाल दोपहर को घर होते ही नहीं थे। वह तो अपने ऑफिस में काम कर रहे होते थे। उसने तो उन्हें टालने की गरज से इतना कुछ कह दिया था और फिर नक्शे की बात तो सरासर गलत थी। अब वह कहां से नक्शा पैदा करे? फिर उसने सोचा, अच्छा है तलाश करके बेवकूफ बनेंगे नक्शा होगा तो मिलेगा, जब है ही नहीं तो मिलेगा क्या?

स्कूल से वापसी पर इत्तफाक से चचा इकबाल शज्जी को घर मिल गये। वह सहन में बैठे आशू- गुल्लू और टिन्नू को लतीफे सुना रहे थे।

''ऐ, तुम्हें क्या हुआ, आज तुम्हारा मुंह क्यों लटका हुआ है—'' शज्जी को देखते ही उन्होंने कहा।

''आज ज़रूर बेंच पर खड़े होकर आये हो।''

''जी नहीं आप तो सबको अपने जैसा समझते है।'' शज्जी ने बुरा-सा मुंह बनाया।

''अरे भई क्या हुआ?''

''क्या बताऊं आपको। बेकार ही मुसीबत गले पड़-गई हैं—वह बैठकर जूते खोलने लगा।

''वो है ना मतीन, और सजिद उन्हें स्कूल से रोज भाग जाने के सिवा और कोई काम है नहीं। अब कल से खामख्वाह मेरी जान को आये हुये हैं।''

वजह तो होगी कोई?''

''बात दरअसल यह थी चचाजान। यह मतीन हर वक्त डाकुओं और खजानों की बात करता रहता है। वह कहता है कि अगर उसे किसी का छिपा खजाना मिल जाये तो वह शहर का सबसे बड़ा रईश बन जाये।''

''हूं फिर?''

''फिर क्या, यूं ही अचानक मजाक में मैंने झूठ बोल दिया कि आपके पास किसी खजाने का नक्शा है। अब वह मेरे सिर है कि किसी तरह वह नक्शा मैं उन्हें दे दूं। कसम से चचाजान उनको इतना टालना चाहा मगर वह मानते ही नहीं।''

''यह तुमने बुरा किया''—चचा इकबाल अचानक गंभीर हो गये, मगर तुमने झूठ तो नहीं कहा। एक खजाने का नक्शा सचमुच में मेरे पास है।.''

''है।'' शज्जी हैरत से चचा इकबाल को देखता रहा गया।

''हां सच, इतने बड़े खजाने का नक्शा है मेरे पास कि उस खजाने से बड़ा कोई खजाना हो ही नहीं सकता।''

''तो आप उस खजाने को निकाल क्यों नहीं लेते। एक कोठी लीजिए। एक कार . . . . .''

चचा इकबाल अजीब से अंदाज में हंसे, ''अरे बुद्धु मैने उस खजाने से बहुत कुछ निकाल लिया है लेकिन वह ऐसा अनोखा खजाना है कि उसमें जितना जी चाहे निकाल लो वह कम नहीं हो सकता। खैर मैं तुझे उस खजाने के नक्शे के बारे में बताता हूं।

शज्जी उनकी तरफ सवालिया नजर से तकने लगा।

''मेरे दादा और तुम्हारे परदादा डाकू नहीं थे लेकिन फिर भी उनके पास एक खजाना, कभी न खत्म होने वाला खजाना, उन्होंने उस खजाने तक पहुंचाने के रास्ते का एक नक्शा भी बनाया जो तुम्हारे और मेरे पापा को विरासत में मिला फिर वह नक्शा तुम्हारे पापा को मिला और अब वह नक्शा मेरे पास है लेकिन अब वह नक्शा तुम्हें मिल जायेगा।''

''मुझे!''—शज्जी उछल पड़ा,'' मुझे मिल जायेगा, सचमुच!''

''लेकिन आसानी से नहीं मिलेगा तुम्हें ''चाचा इकबाल मुस्कराये,'' तुम्हें अपने साथियों के साथ मेरे कमरे की तलाशी लेनी पड़ेगी। नक्शा तलाश कर लो फिर वह खजाना तुम्हारा और तुम्हारे साथियों का होगा।''

शज्जी ने आगे कुछ भी नहीं सुना। वह उठा और बाहर निकल गया। एक दोपहर को चचा इकबाल अपने कमरे में सो रहे थे। उनके खर्राटों की आवाज सारे में गूंज रही थी। शज्जी ने आहिस्ता से कमरे का दरवाजा खोला फिर वह चारों अंदर कमरे में दाखिल हो गये और कमरे की तलाशी ली जाने लगी। सब कुछ उलटपलट किया गया। अचानक शज्जी खुशी से उछल पड़ा। आलमारी से एक पुरानी और मोटी किताब फर्श पर गिरी और उसके अन्दर से एक पुराने कागज का बड़ा सा लिफाफा निकल कर बाहर आ गया। शज्जी ने जल्दी से खोला। वह खजाने का नक्शा ही था। उसने भूगोल के नक्शे में बनाये जाने वाले सांकेतिक निशानों के बारे में पढ़ा था। वह जल्दी से मतीन का हाथ पकड़ कर कमरे से बाहर निकल गया।

अपने घर से मतीन ने कुदाल ले ली। साजिद एक मिट्टी खोदने का फावड़ा ले आया और वह तीनों शज्जी के पीछे चल पड़े। शज्जी नक्शे के सहारे आगे बढ़ रहा था। ''अब पचास कदम दाईं तरफ'' शज्जी ने दायी तरफ मुड़ने वाली सड़क की तरफ इशारा किया और इसी तरह नक्शे के सहारे वह बस उस जगह तक पहुंच गये जहां खजाना होना चाहिये ।

वह चारों खुशी से पागल हो उठे। यहीं वह खजाना छिपा है—'शज्जी की आवाज खुशी से कांप सी रही थी, दिल अजीब से अंदाज में धड़क रहा था अचानक उसकी निगाह उस इमारत पर टिक कर रह गयी जिसके सामने इस समय वह सब खड़े थे। यह इमारत उनके अपने स्कूल की इमारत थी।

फाटक के ऊपर स्कूल के नाम के बाद बोर्ड पर बडे बड़े शब्दों में लिखा था—''ज्ञान ही सबसे बड़ा खजाना है।'' ●



मैं फूल किंग साइज मैन्थल सिगरेट कम्पनी का सेल्ज मैन हूं। राजा से मिलना चाहता हूं।
तुम्हें पता नहीं है राजा साहब तो सिगरेट पीते ही नहीं।
भाई, यह लो पांच का नोट। इसे मेरा बिजिटिंग कार्ड समझ लो। मुझे राजा से मिल तो लेने दो।
चलो जाओ, मेरा क्या जाता है? लेकिन राजा के पास दाल गलेगी नहीं तुम्हारी।
हजूर की खिदमत में बंदा आदाब पेश करता है।
यह जानते हुये भी कि मुझे सिगरेट से कितनी सख्त नफरत है तुमने मेरे पास आने की जुर्रत की? ठीक है अगर तुम यह साबित न कर सके कि सिगरेट अच्छी चीज है तो मैं तुम्हें तोप के मुंह पर बंधवा कर उड़वा दूंगा।
मंजूर है। हुजूर दुनिया का हर सेल्समैन घर से सिर पर कफन बांध कर ही निकलता है। आप जैसे किंग सिगरेट नहीं पीयेंगे तो हमारी किंग सिगरेटें कौन पीयेगा?
महाराज, सिगरेट तो पीकर देखने वाली चीज है। जरा लगा कर देखिये।
महाराज यही तो हमारी सिगरेट में खूबी है इसे पीकर इतने जोर की खांसी आती है कि लड़ाई के मैदान में दुश्मनों की आधी फौज तो यही समझ कर भाग जायेगी कि शेर दहाड़ रहा है।
बोलो, अब तुम्हें क्या कहना है?
रातभर आपको खांसी आयेगी और पहरेदार जागते रहेंगे तो कोई बागी सोते में आपका सिर काट कर नहीं ले जा सकेगा।
सिपाहियों, पकड लो इसे।
ठहरिये महाराज, अभी असली राज़ तो मैंने बताया ही नहीं। अगर आप बचपन से ही सिगरेट पी रहे होते तो शायद आपका कद मेरे बराबर ऊंचा होता। आपने देखा होगा बच्चा पैदा होता है तो डाक्टर उसे टांग से पकड़ उल्टा लटका कर थप्पड़ मारता है ताकि दिल और फेफड़े चालू हो जायें। आदमी नाटा इसलिये रह जाता है किसी कारण उसके कद बढ़ाने वाला हारमोन निष्क्रिय रह जाता है। सिगरेट पीकर आपको खांसी आयेगी। सारे शरीर को जबरदस्त झटके लगेंगे, हो सकता है उन झटकों के कारण आपका सोया हारमोन जाग जाये और आपका कद ऐसे बढ़े जैसे ट्रांजिस्टर में से ऐरियल निकलता है।
उस सेल्ज मैन के बच्चे ने हमारे राजा को पता नहीं क्यां पट्टी पढ़ा दी कि अब दिन रात सिगरेट पीता रहता है। कहां तो पहले सिगरेट का नाम सुनते ही तलवार निकाल लेता था।



मि. जीटर ने उठ कर अपने कपड़ों पर से धूल मिट्टी झाड़ी और बोले "ठीक है लड़कों, इस के लिये तुम्हें पछताना पड़ेगा. साथ ही तुम्हें घड़ी मिलने का भी पछतावा ही ही होगा." ऐसा कहते-कहते वह बाहर चला गया.

राजा कौन है ?

राजू ने डेस्क पर हाथ मारते हुए कहा "अब मीटिंग शुरू होती हैं. और हैडमास्टर के छोटे दफ़्तर में बैठे तीनों और लड़के चुप हो गये. यह बात लड़कों के चिल्लानेवाली घड़ी मिलने तथा मि. जीटर के उसके छीनने का प्रयास करने के अगले दिन की दोपहर की बात है. वे बहुत व्यस्त थे तथा अब बैठ कर वे देखना चाहते थे कि वे खोज में कहां तक आगे बढ़ पाये हैं.

राजू ने हरी को उसके घर फोन किया था और क्योंकि हरी के पास कार ड्राइव करने का अपना लाइसेंस था वह अपने पिता की पुरानी कार ले कर माथुर कबाड़ी घर इनसे मिलने आ गया था.

राजू ने श्याम को अपनी रिपोर्ट बताने को कहा. श्याम लड़कों में सबसे अधिक व्यस्त था, उस दिन सुबह श्याम अपने पिता के साथ नई देहली गया था जहां के एक समाचार पत्र में उसके पिता फीचर लिखते थे. उसके पिता ने वहां के रिकार्डरूम के इन्चार्ज से श्याम को मिलवाया था. रिकार्ड-रूम में सैकड़ों फाईलिंग कैबिनट लगे थे जिनमें अखबार में छपी कहानियों की कटिंग नाम और विषय के आधार पर रखी हुई थीं. नाम कहानी से सम्बन्धित व्यक्ति का था.

श्याम का विशेष काम आज यहां से हरी के पिता महेश चन्द्र तथा उनके मुकदमें के विषय में, चंदू घंटे या मि. हरीश के विषय में और बहुमूल्य कलाकृतियों की चोरी के विषय में जानकारी एकत्रित करना था. श्याम बहुत सारी जानकारी एकत्रित करके लाया था जो वह दूसरे लोगों को बताने को उत्सुक था. परन्तु जानकारी उसने संक्षेप में ही दी.

महेशचन्द्र के विषय में अधिक कुछ पता न लगा था उनके मुकदमे के विषय में भी यह लोग करीब-करीब सब कुछ जानने योग्य पहले से ही जानते थे. उनके खिलाफ़ पाये गये सबूत स्थान से सम्बन्धित थे परन्तु पुलिस के उन्हें अपराधी समझने के लिये पर्याप्त थे. पुलिस वालों का यह भी प्रयास रहा था कि महेशचन्द्र इस बात का इक़बाल कर ले कि दस वर्ष से दिल्ली के निकट के स्थानों में होने वाली कलात्मक वस्तुओं की चोरी में इनका हाथ था, परन्तु महेशचन्द्र ने अंत तक अपने को निर्दोष कहा था.

"कुछ चोरियों तो तुम्हारे दिल्ली आने से पहले हुई थीं." राजू ने हरी से पूछा ?

"हां यह ठीक है हम लोग दिल्ली केवल छः वर्ष पहले ही आये हैं, इसीलिए मैं कहता हूं, मेरे पिता का इनमें कोई हाथ नहीं है, उनका पहले हुई चोरियों से कोई सम्बन्ध सम्भव नहीं है" हरी ने उत्तर दिया.

"यदि यह कार्य एक ही गिरोह का है तो, वे इस से सम्बन्धित नहीं हो सकते." राजू बोला, साथ ही उसने श्याम से दस वर्ष से होती रही कलाकृतियों की चोरियों के विषय में बताने को कहा.

श्याम ने बताया कि पिछले दस वर्षों में करीब-करीब एक दर्जन महत्वपूर्ण मूल्यवान पेन्टिंग्स की चोरी हुई है. जो औसतन एक वर्ष में एक पड़ती है. जैसा कि मि. राणादे ने बताया था बहुत से फिल्म अभिनेताओं तथा प्रोड्यूसरों और डाइरेक्टरों को कलात्मक पेन्टिंग्स एकत्रित करने का शौक है. जाहिर है यह पेन्टिंग्स घरों में अजायब घरों के समान सुरक्षित नहीं होती. यहीं इनकी चोरी की गई है, कभी किसी छोटे रोशनदान या खिड़की से भीतर घुस कर तथा कभी दरवाजे का ताला खोल कर पेन्टिंग्स को फ्रेम से काट कर चुराया गया है. इस प्रकार चोर अपना सुराग छोड़े बिना फरार होते रहे हैं. पुलिस का कहना है कि ये कृतियां चोरों द्वारा शहर के बाहर कलाकृतियां एकत्रित करनेवालों को बेची गई हैं, जो इन्हें अपनी खुशी के लिये अपनी निजी एकत्रित कृतियों में छिपा कर रखते थे. बहुमूल्य कलाकृतियों का कला के जगत में सभी को ज्ञान है इसलिये इन कृतियों को कानूनी तौर पर बेच पाना सम्भव नहीं होगा. ये कृतियां अवश्य ही ऐसे व्यक्तियों को बेची गई होंगी जो इन्हें कभी प्रदर्शित नहीं करेंगे.

"और कोई कभी पकड़ी भी नहीं जा पाई है" राजू ने प्रश्न किया.

"कोई भी पकड़ी नहीं गई थी जब तक कि तीन पेन्टिंग हरी के घर में नहीं पकड़ी गई थी. फिर उसने उन्हें दो वर्ष पहले हुई एक बहुत बड़ी चोरी की जानकारी दी. बहुत सी नायाब पेन्टिग एक गैलरी में प्रदर्शित करने के लिये उधार दी गई थीं परन्तु प्रदर्शित होने से पहले ही उनमें से पांच पेन्टिंग जिनकी कीमत ढाई लाख रुपये के करीब थी चोरी चली गई. "परन्तु इसे भी रिकार्ड नहीं माना जा सकता" श्याम ने बताया कुछ ही पहले एक ईंगलिश अजायबघर की दरवाजे की पैनल को काट कर किसी ने आठ पेन्टिंग चुराई थीं इनका मूल्य दस और पन्द्रह लाख के करीब रहा होगा. वे बाद में मिल गई थीं परन्तु कला की बहुमूल्य चोरी का यह रिकार्ड है." "वाओ" महिन्दर बोला पेन्टिंगस के लिये तो यह कीमत बहुत अधिक है."

"ठीक है" श्याम ने सहमत होते हुए कहा, बहुत सी अमूल्य पेन्टिंग इस शहर में भी चोरी हुई हैं. चोरी इतनी सफ़ाई से की गई है कि पुलिस हर बार चक्कर में पड़ गई थी. अब पुलिस वालों का ख्याल है कि इन सब चोरियों में हरी के पिता का हाथ रहा होगा, परन्तु उन पर पुलिस का शक बिलकुल न होता यदि कुछ दिन पहले वह जीवन बीमा करने . . ."

"रुको एक मिनट", हरी गुस्से से बोला "मैं कह चुका हूं मेरे पिता ने चोरी नहीं की है, तुम कहना चाहते हो क्यों कि मेरे पिता बीमा करने बड़े-बड़े घरों में जाते थे . . ."

"शान्त हो जाओ" राजू धीरे से बोला "हमें विश्वास नहीं है कि तुम्हारे पिता ने चोरी की है, तुम्हारे घर की रसोई के



लिनोयम फर्श के नीचे पेन्टिंग पहुंचने का प्रश्न भी रहस्यमय है, हमारे पास काफ़ी गुत्थियों इकट्ठी हो गई लगती हैं पहली . . . पेन्टिंग किसने चुराई? दूसरे . . .जहां वे मिलीं वहां कैसे पहुंचीं? तीसरे मि. हरीश या मि. घंटा जो भी उनका असली नाम हो सैर करने जा कर गायब क्यों हो गये? . . .चौथा . .घड़ी वास्तव में कहां से आई है और इसका अर्थ क्या है?'' और कहते-कहते राजू ने सामने मेज़ पर रखी घड़ी को छुआ.

''यह घड़ी वास्तव में महत्वपूर्ण है, कल मि. जीटर इसे हम से छीनने को बहुत आतुर थे, इसका अर्थ है इसमें कोई न कोई विशेषता अवश्य है.''

''मुझे खेद है मैंने मि. जीटर को तुम्हारे और घड़ी के विषय में बताया था,'' हरी बोला ''परन्तु तुम्हारे जाते ही उन्होंने तुम्हारे विषय में मुझ से पूछताछ आरम्भ कर दी थी और उन्होंने मेरी मां को धमकी देकर डराया भी था. इसलिए मैंने उन्हें बता दिया कि तुम लोग मि. हरीश की एक चिल्लाने वाली घड़ी जो तुम्हें कहीं मिली है कि पूछताछ करने आये थे. और सुनते ही वे भड़क उठे थे

शेष पृष्ठ १४ पर

७० साल से अधिक समय से सब का मनपसन्द शरबत

शरबत रूह अफ़ज़ा ७० साल से अधिक समय से लोगों को गर्मी के दिनों में ठंडक और तरावट पहुँचाता आ रहा है।

शरबत रूह अफ़ज़ा ताज़गी देने वाली १६ जड़ी-बूटियों और फलों के असली रस से बनता है। यह प्यास ही नहीं बुझाता, बल्कि आप के शरीर को गर्मी का मुकाबला करने की शक्ति भी देता है।

इसे आप चीनी की जगह ठंडे पानी, लस्सी, दूध और आईस-क्रीम में डालिये और भरपूर आनंद लीजिये।



हमदर्द

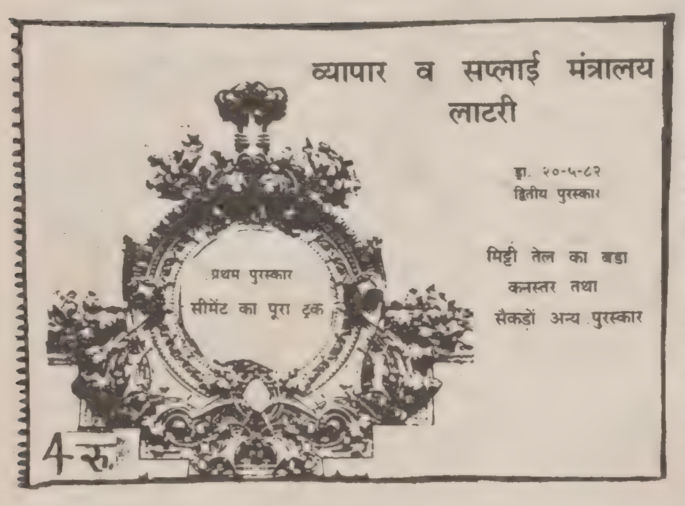
शरबत रूह अफ़ज़ा

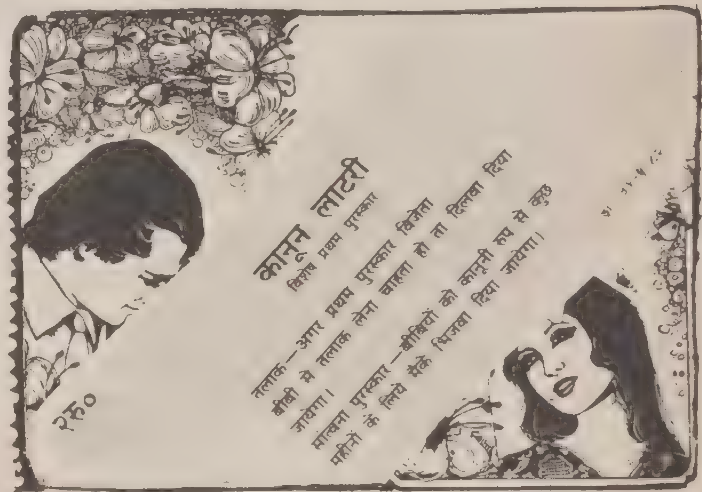
'क्या लाजवाब चीज़ है'

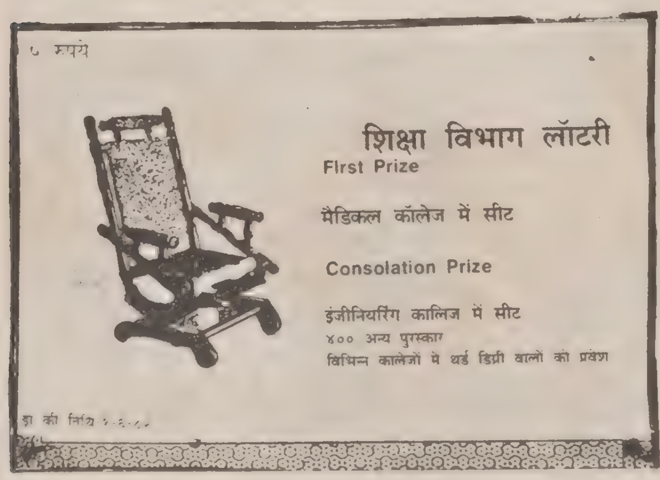
HTD-HWL 7284

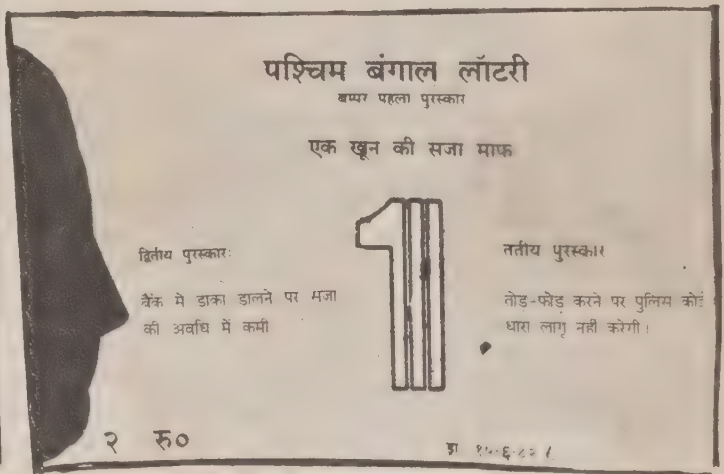
नयी लाटरियां

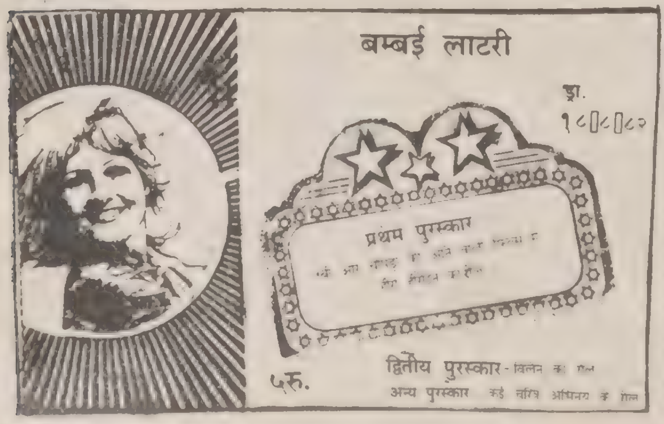
राजस्थान ने ५५ लाख रुपये प्रथम पुरस्कार वाली लाटरी निकाली, लेकिन टिकटों की बिक्री न होने के कारण ड्रा की तारीख दो बार बढ़ानी पड़ी। वास्तव में नकद पुरस्कारों से लोगों का मन उक्ता रहा है। लोगों को लाटरियों की ओर दोबारा आकर्षित करने के लिये नये-नये प्रकार के पुरस्कार रखे जायें। यहां हम कुछ उदाहरण पेश कर रहे हैं। हमारी सलाह मानी गयी तो लोग लाटरियों की टिकटों पर ऐसे ही टूटेंगे जैसे मक्खियां गुड़ पर टूटती हैं। लाटरी विभागों की डूबती नावें तर जायेंगी। कई सरकारी विभागों का खर्चा लाटरियों से ही निकलेगा।

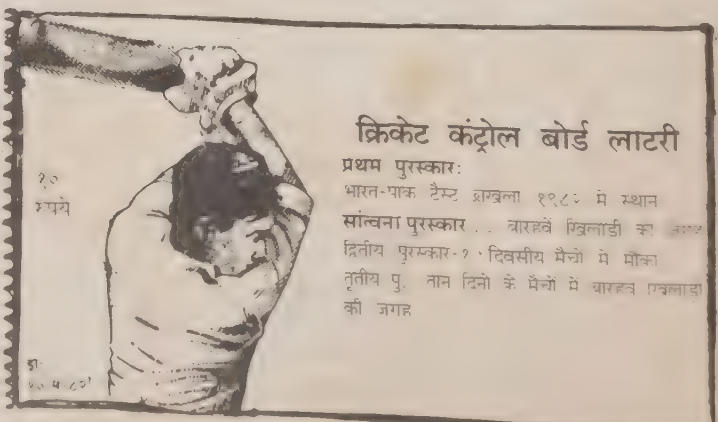












कैबिनेट लाटरी

बम्पर पुरस्कार

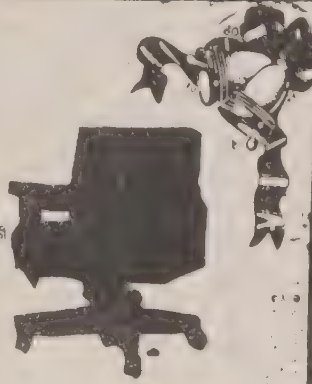
मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री का पद

सांत्वना पुरस्कार—सरकारी प्रतिष्ठानों में चेयर मैनो की पदवियां

ड्रा. २२-७-८२

हजारों अन्य पुरस्कार

१०० रुपये



राजस्थान लॉटरी

5 रु

विशाल प्रथम पुरस्कार

मिस जयपुर १९८२ से प्रथम पुरस्कार विजेता की शादी

सांत्वना पुरस्कार—
शादी के निमंत्रण कार्ड

ड्रा—३०-१२-८२



केन्द्रीय सेवा लाटरी

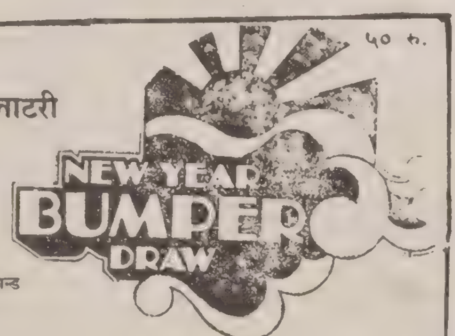
५० रु.

प्रथम पुरस्कार

—IAS या IPS में चुनाव

द्वितीय पुरस्कार

—दूसरी श्रेणी के अफसरों के लिये चुनाव—सेना में नानकमिशन्ड अफसरों का पद।



ड्रा. ८-८-८२



५० रु०

चुनाव आयोग लाटरी

प्रथम पुरस्कार

मनपसन्द पार्टी का लोकसभा टिकट

सांत्वना पुरस्कार-मनपसन्द पार्टी का विधान सभा का टिकट

अन्य पुरस्कार-अन्य पार्टियों के १०० चुनाव टिकट

ड्रा 30-12-82

"खानदानी शफाखाना" की तीन मशहूर हस्तियाँ

हकीम हरिकिशन लाल और उनके दो सुपुत्र



डा० राजेन्द्र एबट
G.A.M.S
M.Sc.A. D.Sc.A.
SEX SPECIALIST



हकीम हरीकिशन लाल
Member Govt. Tibbi Board, Delhi State
SEX SPECIALIST



डा० विजय एबट
G.A.M.S.,
M.Sc.A., D.Sc.A
SEX SPECIALIST

शादी से पहले और शादी के बाद खोई हुई

ताक़त व जवानी

पुनः प्राप्त करने के लिए

(SEX SPECIALIST) से

खानदानी शफाखाना

लाल कुआं बाजार, देहली में मिलें या लिखें

हकीम साहब की लिखी कीमती पुस्तक मुफ्त मंगाएँ

सन्तान के इच्छुक स्त्री व पुरुष मिलें या लिखें

आप कई बार ब्रतानिया, अमरीका, जर्मनी, फ्रांस, व यूरोप का दौरा करके हजारों मरीजों को नई **जवानी व ताकत** दे चुके हैं.

मिलने का समय,

प्रात: ९.३० बजे से १२.३० बजे तक,
सायं ५.०० बजे से ७.३० बजे तक,
इतवार को केवल प्रात: ९.३० बजे से १२.३० बजे तक

इलाज की कीमत :

- नवाबी शाहाना इलाज 3100 रु०
- खानदानी शाहाना इलाज 2001 रु०
- लन्दन स्पेशल इलाज 999 रु०
- अफ्रीका स्पेशल इलाज 550 रु०
- मध्यम इलाज 250 रु० आम इलाज 125 रु०

इसके अलावा खास नवाबी शाहाना स्पेशल इलाज भी तैयार है।

नोट : हमारे शफाखाने से मिलते-जुलते नाम देखकर कहीं गलत जगह न पहुंच जायें। इसलिए याद रखें हमारा शफाखाना जीनत महल के बिलकुल सामने, ग्राउन्ड फ्लोर पर बरामदे के नीचे लाल कुआं बाजार में है। शफाखाने के बाहर दोनों तरफ लगी हुई हकीम साहब की फोटो जरूर देख लें। हमारे शफाखाने की किसी जगह कोई भी ब्रांच व नुमाइन्दा नहीं है

मैनेजर :

खानदानी शफाखाना रजि० (एयरकन्डीशन्ड)

1044, लाल कुआं बाजार, दिल्ली-6, फोन 232598

[नोट : अजमेरी गेट व फतेहपुरी (चांदनी चौक) के बीच में]

PRATAP

पृष्ठ ११ से आगे

तुम्हारा कार्ड मुझ से छीन कर तुरन्त चल पड़े थे."

"भाग्य से हस उस समय हमारी सहायता को यहां था," राजू बोला, "अच्छा हरा बताओ तुम्हारे घर में रहते हुए कभी मि. जीटर कोई संदेहजनक कार्य करते हैं?"

"वे रात को घर के बहुत चक्कर लगाते है," हरी बोला, "उनका कहना है वे एक लेखक हैं और रात को उन्हें नींद नहीं आती. एक रात मैंने उन्हें दिवारों को ठोक-ठोक कर बजाते देखा था मानो वे कुछ ढूंढ रहे हों.

"हूं, राजू ने होठ दबा कर सोचना आरम्भ किया. मुझे एक विचार आया है परन्तु हो सकता है गलत हो. चलो काम में ही लगते हैं. मैं सोचता हूं जो चोरियां पुलिस न पकड़ सकी उनका हम कैसे पता लगा सकते हैं. परन्तु घड़ी की समस्या हमारे सामने है, अभी तक हमें यह भी मालूम नहीं हुआ घड़ी आई कहां से है तो अब इसी पर **ध्यान** देते हैं."

"उससे मेरे पिता को क्या सहायता मिलेगी." हरी गर्म हो कर बोला "वे जेल में बन्द हैं और तुम घड़ी की समस्या सुलझाने में लगे हो."

"हमें कहीं तो शुरुआत करनी ही होगी" राजू ने उसे समझाया "यहां हमारे पास कई समस्यायें हैं और मेरे ख्याल से घड़ी का इन सब से ही सम्बन्ध है." "ठीक है", परन्तु तुम घड़ी का क्या पता लगाओगे, यदि ये तुम्हें कूड़े में ही मिली है," हरी बड़बड़या.

"हमारे पास घड़ी के नीचे चिपका एक संदेश है." गज़ बोला. और साथ ही उसने **मेज** की एक गुप्त दराज खोल, जिसमें वह छोटी-छोटी वस्तुएं सुरक्षित रखता था, घड़ी के नीचें चिपका पाया कागज़ निकाला. उसने संदेश दुबारा जोर से पढा.

प्यारे राजा,
इला से पूछो
गोवर्धन से पूछो
मीरा से पूछो
फिर अमल **करो** नतीजा देख कर तुम भी हैरान हो जाओगे.

"मैं अब भी पूछता हूं यह लोग कौन है" महिन्दर बोला हम इनका पता कैसे लगा सकते हैं और यदि यह लोग मिल भी जायेंगे तो इनसे पूछें क्या?"

"एक-एक बात कर सोचो" राजू बोला. "मेरे ख्याल से संदेश राजा के लिये है तो **इसका नतीजा यह निकलता है कि** संदेश के साथ यह घड़ी राजा को भेजी गई होगी. चलो राजा का पता लगाते हैं."

"परन्तु महिन्दर के शब्दों में कैसे? श्याम बोला. "हमें अक्ल से काम लेना चाहिए" राजू बोला, "राजा मि. हरीश या चंदू घंटा का मित्र होगा तभी उन्हें केवल राजा कह कर सम्बोधित किया है. हरी क्या तुम मि. घंटे की पतों की डायरी लाये हो?"

"मुझे उनकी कोइ डायरी नहीं मिली. **पीछे की दराज में पड़ा एक कागज़** मिला है जिस पर उन्होंने नववर्ष पर कार्ड भेजने के लिये अपने परिचितों के नाम लिख रखे हैं," और उसने एक मुड़ा हुआ कागज़ राजू को दिया.

राजू ने कागज़ को सीधा कर फैलाते हुए कहा, मि. घंटे के मित्रों के नाम कार्ड भेजने की लिस्ट में होने चाहिएं. इस सूची में लगभग सौ नाम पतों सहित टाइप हुए. हैं इसमें राजा का नाम ढूंढते हैं. "इसमें एक इला और दो गोवर्धन और तीन मीरा हैं परन्तु राजा तो कोई नहीं दिखाई दे रहा," श्याम बोला.

"तुम ठीक ही कहते हो राजा का नाम कहीं दिखाई नहीं दे रहा" राजू बोला.

"ठहरो! ठहरो! एक क्षण रुको" श्याम बोला, "एक महाराज कुमार है."

महिन्दर ने पूछा इससे क्या मतलब है?

"महाराज और राजा एक से ही अर्थ वाले शब्द हैं.

महाराज कुमार का उपनाम राजा होना बहुत ही स्वभाविक है." श्याम बोला.

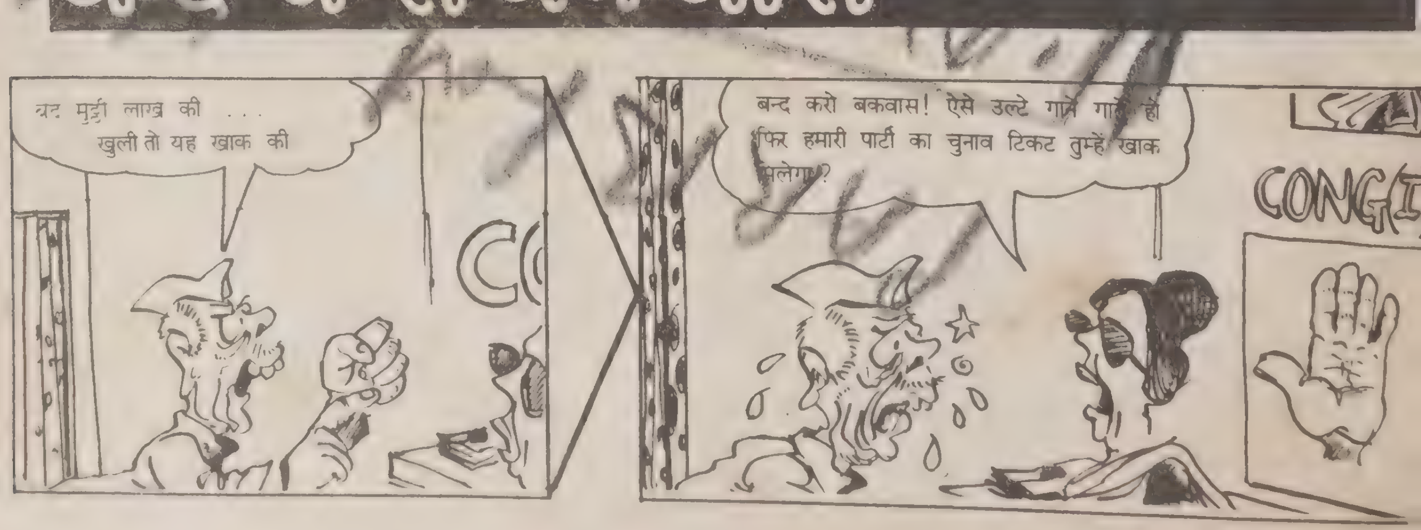
"मुझे तो इसमें कोई तुक नहीं दिखाई देती," हरी बड़बड़ाया परन्तु राजू एक कार्ड पर महाराज कुमार का नाम और पता नोट कर रहा था.

"बहुत ही अच्छा निष्कर्ष निकाला है तुमने," राजू ने श्याम से कहा. "हमें यही एक सुराग मिला है जिसके सहारे हमें आगे बढ़ना है. अब हमें देखने है इला, गोवर्धन और मीरा, ये रही इला मेहरा शालीमार के उत्तरी भाग में, और यह हैं दो गोवर्धन दोनों ही करोलबाग की ओर रहते हैं. हम चार लोग हैं. मेरे विचार से हम दो टीमों में बंट जाते हैं. श्याम तुम और हरी, एक टीम में हो सकते हो क्योंकि हरी के पास कार है. माहिन्दर और मैं दूसरी टीम बनाते हैं, मैं किराये की गाड़ी वाले मि. गणेश को फोन कर कार मंगवा लेता हूं."

"हम इन लोगों से मिल कर दोपहर को

शेष पृष्ठ ३४ पर

बन्द करो बकवास

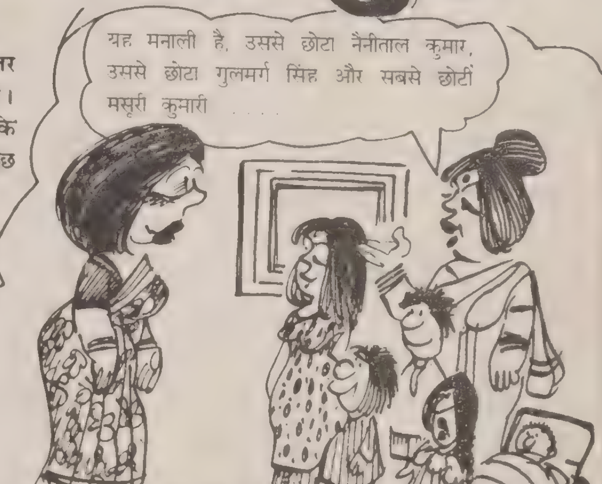


हिलस्टेशन का पुट

गर्मियां आई और लोग पड़ौसियों से सूटकेस और होलडाल उधार लेकर दफ्तर से एडवांस लेकर हिलस्टेशनों की ओर रवाना हुये। मजा गर्मियों में ठंडे हिलस्टेशन पर समय बिताने में इतना नहीं है जितना वहां से लौट कर अपने पड़ौसियों या दफ्तर वालों में हिलस्टेशन का रौब झाड़ने में। बात-बात पर लोगों को यह जताने का कि मैं हिलस्टेशन हो आया हूं। हमारे कुछ सुझावों का प्रयोग भी कर के देखें।



हर स्थिति में हिलस्टेशन का तड़का डालना न भूलें।



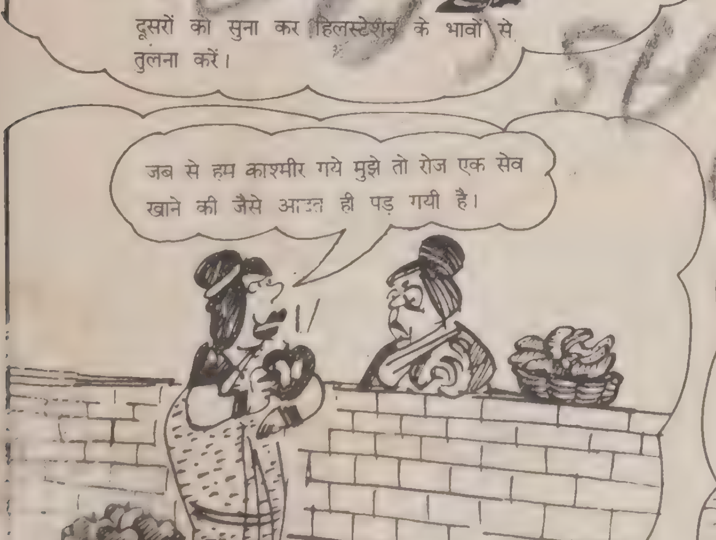
बच्चों के नाम हिलस्टेशनों पर रखें जिस वर्ष जिस हिलस्टेशन पर हो आये हों उस वर्ष के बच्चे का नाम ही रखें।



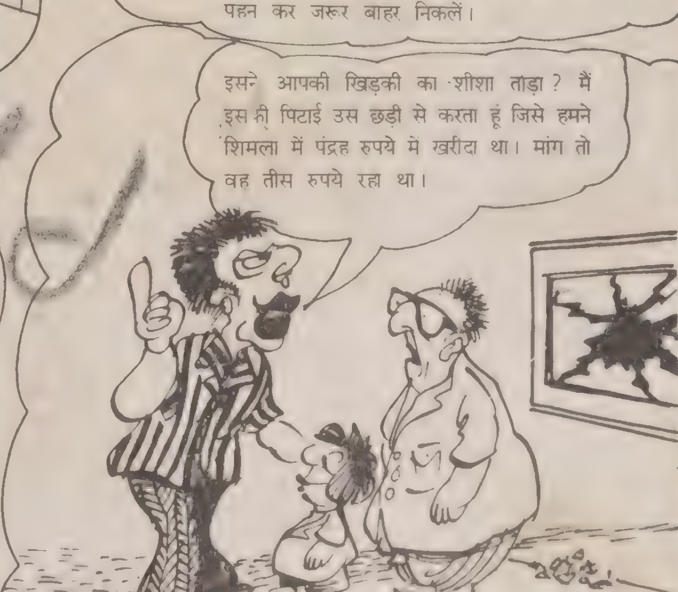
दूसरों को सुना कर हिलस्टेशन के भावों से तुलना करें।



हिलस्टेशन से कुछ न कुछ जरूर लायें। वहां का ड्रैस। वापिस आकर दिन में एक बार उसे पहन कर जरूर बाहर निकलें।



खाने-पीने में भी हिलस्टेशन जरूर घुसेड़ें।



हिलस्टेशन से लाई चीजों का जिक्र करने का कोई मौका न चूकें।

क्यों और कैसे

नमक का हमारे शरीर पर क्या प्रभाव होता है?

उच्च रक्तचाप या हाई ब्लडप्रेशर एक ऐसा घातक रोग है जिससे (अक्सर बिना ही किसी चिन्ह के) गुर्दे फेल हो जाना रक्ताघात अथवा हृदय रोग हो जाते हैं। इसका मुख्य कारण "अधिक नमक" जिसका ४० प्रतिशत सोड़ियम है, उच्चरक्त-चाप का मुख्य कारण है और हम लोगों में अधिकतर शरीर की आवश्यकता से लगभग २०-३० गुना अधिक नमक खाते हैं।

शरीर को कार्य करने के लिये कुछ नमक की आवश्यकता है। सोडियम पोटेशियम और क्लोराइड का मिश्रण शरीर के अणुओं के भीतर और बाहर पानी तथा इलैक्ट्रोला-इटस की मात्रा का नियंत्रण करने का आव-श्यक मिश्रण है। इन न्यूट्रिन्टस के बिना शरीर का कार्य शीघ्र ही रुक जायेगा। परन्तु जीवन यापन के लिये वास्तव में केवल २२० मिलीग्राम नमक (एक छोटे चमच का दसवां भाग) नित्य की आवश्यकता होती है।

कुछ ही लोग इस बात को अनुभव करते हैं कि हम प्रतिदिन कितना नमक खाते हैं। यदि हम दिखाई देने वाला नमक नहीं के बराबर भी खाते है तो भी हमें नहीं मालूम हम कितना नमक शरीर में एकत्रित कर रहे हैं जो प्रोसेस्ड मांस, बने हुए भोजन और पनीर इत्यादि के साथ शरीर में जाता है.। उदाहरण के लिये, १४ आलू के चिप्स में १९० मि.ग्रा. नमक होता है तो २८ ग्राम नमकीन मुंगफली में १३२ मि.ग्रा., दो डबलरोटी के टुकड़ों में २३४ मि.ग्रा. तथा २४ ग्राम कोर्न फ्लेक्स में २४८ मि.ग्रा. और आधा प्याला घर बने पनीर में लगभग ४३५ मि.ग्रा. नमक होता है। इससे जाहिर है हमें नमक का प्रयोग करते समय कितना सावधान रहना चाहिए।

प्र. : घरों के भीतर नलसाजी की खोज कब और किसने की थी?

उ. : घरों में नलसाजीका अर्थ आमतौर पर एक ऐसी प्रणाली से है जिसके दो भाग हैं। इनमें से एक सिस्टम उन पाइपों और वैल्वों से सम्बन्धित है जो सड़कों के नीचे के मुख्य नल से पानी हमारे घरों के भीतर ला कर, घर के भीतर सब स्थानों पर पहुंचाता है तथा दूसरा सिस्टम उन पाइपों और नालियों का है जो घर के भीतर का गंदा पानी ले जा कर सड़क के नीचे बिछी गंदी नालियों में डाल देता है।

नलसाजी का सबसे पुराना प्रमाण पुरातत्व खोज कर्ताओं द्वारा मेडिटेरेनियन सागर के एक टापू 'क्रेट' की खोज से प्राप्त हुआ है। इन टापू पर खुदाई में एक ४,००० वर्ष पुराने महल के अवशेष प्राप्त हुए हैं जिसमें पानी लाने तथा ले जाने का पूरा सिस्टम बना हुआ था। पानी का सिस्टम कन्डयूइट से बना था जो पत्थर से बनी नालियां होती हैं जिनमें पानी बहता है। इन कन्ड्इटस की टंकियां पत्थर की बनी हुई थीं जिनमें बारिश और पहाड़ों से आने वाला पानी एकत्रित होता था फिर पत्थर की खड़ी नालियों द्वारा इसे नीचे ले जा कर गुसलखानों इत्यादि में ले जाया जाता था। गंदा और बेकार पानी टेरा कोटा के बने पाइपों द्वारा घर से बाहर ले जाया जाता था। टेरा कोटा एक प्रकार की पकाई हुई मिट्टी होती है। आश्चर्यजनक बात यह है कि यह टेरा-कोटा पाइप ऐसे बने हुए थे कि इन्हें आसानी से लगाया जा सकता था। हर पाइप का एक सिरा ऐसा बना हुआ था कि वह दूसरे पाइप में फिट हो जाये और फिर पाइपों को सीमेंट जैसी मिट्टी से जोड़ा गया था।

लैड के पाइपों का इस्तेमाल सब से पहले रोम में आरम्भ हुआ था वहां इन लैड के पाइप को लगाने वाले मिस्त्रियों को 'प्लम्बेरियस' मतलब लैड का काम करने वाला' कहते थे। इसी शब्द से अंग्रेजी का शब्द प्लम्बर और प्लम्बिंग भी आरम्भ हुए थे।

पाइप में लैड का प्रयोग अब भी किया जाता है। नलसाजी में प्रयोग होने वाले अन्य धातु हैं-लोहा, तांबा पीतल, कच्चा लोहा। रोड़ी तथा प्लास्टिक भी आधुनिक नलसाजी के पाइप बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं प्लास्टिक के बने पाइपों में जंग इत्यादि लगने की समस्या से बचा जा सकता है।

प्र० : संसार की सबसे ऊंची झील कहां है और कितनी ऊंचाई पर स्थित है?

उ० : दक्षिणी अमरीका के भीतरी भाग में बोलिविया का प्रजातन्त्र है, इसके और पेरु जो इसके दक्षिण में है एक टीटीकाला नामक झील है। यह दक्षिणी अमरीका की सबसे बड़ी झील है, परन्तु यह झील केवल अपने नाप के लिये बड़ी प्रसिद्ध नहीं है, जो ३००० वर्ग मील से भी अधिक है परन्तु यह झील समुद्र की सतह से १३,००० फीट ऊंचाई पर स्थित है। इस ऊंचाई का अनुमान लगाने के लिये कहा जा सकता है कि ऐलप्स की कई चोटियों की इतनी ऊंचाई है. स्विटजरलैंड अंगफ्रों पर्वत पर चढ़ने पर भी हम केवल १३,६५८ फीट समुद्र सतह से ऊपर ही पहुंचते हैं। परन्तु यूरोप में इस ऊंचाई पर पहुंचने पर हम घनी न पिघलने वाली बर्फों में पहुंच जाते है, जहां कुछ देर भी ठहर पाना अत्यन्त कठिन काम है। परन्तु दक्षिणी अमरीका में समुद्री सतह से इतनी ऊंचाई पर स्थित इस झील पर न केवल लोग रहते हैं. वरन इसमें स्टीम-बोट भी चलती दिखाई देती है।

यहां के निवासियों की एक विशेष प्रकार की स्वयं बनाई बोट होती है जो वहीं पैदा होने वाली एक प्रकार की घास से बनाई जाती है। यह झील पेरु और बोलिविया के बीच की पर्वत श्रृंखलाओं पर की एक सपाट धरती पर स्थित है। बोविविया की राजधानी लापाज नगर १२,७०० फीयगऊंइइ है। इस नगर से झील के किनारे तक रेल जाती है। कल्पना करने से की ऐलप्स पर्वत की चढ़ाई और बादलों से ऊपर भी उसी ऊंचाई पर पहुंच जाना बहुत ही अजीब लगता है।

परन्तु टीटीकाका झील एक उष्णकटिबन्धी देश में है जो बिलकुल ही अलग बात है।

बोलिवियन ओर से रेल से झील के तट पर पहुंच कर यात्री झील पार कर पेरू में पहुंच सकता है। झील में सूर्य तथा चन्द्रमा के सुन्दर टापू दिखाई देते हैं। वहां रहने वाले भारतीय इन स्थानों को पुण्य मानते थे।

यहां फलैमिन्त्रों तथा अन्य सुन्दर पक्षियों के झुंड भी दृष्टिगोचर होते हैं झील अभी भी बहुत बड़ी है परन्तु ऐसा कहा जाता है कि यह छोटी होती जा रही है। इस झील में पिघलती बर्फ का पानी निरन्तर आता रहता है, इसी कारण इसका पानी पूरे वर्ष अत्यन्त ठंडा रहता है, फिर भी पानी का तापमान कभी भी इतना कम नहीं होता कि वह जम जाये। यहां की शान्ति अक्सर तेज हवाओं और ग्रीष्म ऋतु के तेज तूफानों से भंग होती रहती है।

क्यों और कैसे?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००.

अगर जानवरों के कुछ फीचर मनुष्यों में आजायें

यदि जानवरों के कुछ अंग मनुष्यों में विकसित हो जायें तो मानव मात्र की कितनी भलाई होगी!



आपस की बातें

सच्ची बातों को कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

पंडित मेवा लाल 'परदेसी'—महोबा : क्या दीवाना पागल खाने में भी पढ़ा जाता है?

उ० : बड़े शौक से पढ़ा जाता है. इसे पढ़ कर बहुत से पागल भले चंगे हो कर दीवाने हो चुके हैं.

रामकुमार, आशापुर—फैजाबाद : दीवाना, फ्रैंडस क्लब में आप लड़कियों के फोटो क्यों नहीं देते?

उ० : क्योंकि हम दोस्ती के इस करोबार में दुश्मनी मोल लेने से डरते हैं.

किशोर जेस्वानी—ग्वालियर : चाचा जी, आप का मनपसंद नेता और अभिनेता कौन है?

उ० : नेता, सुनील दत्त और अभिनेता राजनारायण.

कुलवंत शर्मा—जबलपुर : नफरत मुहब्बत की प्रथम सीढ़ी है. तो मुहब्बत की अंतिम सीढ़ी कौन सी है?

उ० : पता नहीं, आजकल कुतबमीनार की सीढ़ियों पर चढ़ना मना है.

सुरेन्द्र गौसाई—रोहतक : माई डीयर चाचा जी, अगर चाची आप से जोरू का गुलाम फिल्म देखने के लिये कहें तो आप क्या करेंगे?

उ० : इस बात का मातम करेंगे कि जब हमें देख लिया तो फिल्म पर पैसे क्यों लुटाये जा रहे हैं?

प्रह्लाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला : चाचा जी, मनुष्य समय से कब डरता है?

उ०: जब समय प्रलय लाने की धमकी देता है यह धमकी उसने अभी पिछले दिनों दी थी, जब दस ग्रहों ने अपना संयुक्त मोर्चा बना कर हमारा कबाड़ा करने की ठानी थी. अब ज्योतिषि विद्या के अनुसार पांच सात साल बाद यह ग्रह फिर जनता पार्टी की तरह एक झंडे तले आ कर धरती की खाट खड़ी करने की कोशिश करेंगे।

अमरनाथ चन्देल—विलासपुर : मैं एक लड़की से प्रेम करता हूं. वह भी मुझ से प्रेम करती है, पर उसके घर वाले हमें मिलने नहीं देते. बताइये मैं क्या करूं?

उ० : वही, जो दीवाना में प्रकाशित लल्ला की लवस्टोरी में लल्ला किया करता है.

नरेन्द्र गुलाटी—लुधियाना : प्यार और वासना में क्या अंतर है?

उ० : वही जो बैगन और बताऊं में है.

शीनू—इलाहाबाद : भविष्य बदलने का टिकट कहां से मिलता है?

उ० : आप के कर्मों की पिटारी से.

रविन्द्र गुप्ता—गाजियाबाद : आदमी का गुस्सा किस प्रकार दूर करना चाहिये?

उ० : उसे कोई ऐसी दीवार दिखा देनी चाहिये, जो उसके सर से अधिक मजबूत हो.

प्रेम बाबू शर्मा—बगीची पीर जी : प्रेम विवाह में नफरत कब पैदा हो जाती है?

उ० : जब यह अनुभव होता है, प्रेम विवाह में "प्रेम तबाह" हो गया है.

मुकुल कुमार सक्सैना—नई दिल्ली : दीवाना उसी पुराने बड़े आकार में पा कर बड़ी खुशी हुई है. दीवाना की लोकप्रियता दिन दूनी रात चौगनी बढ़े, यही मनोकामना है।

उ० : विश्वास है कि इसके लिये हमें सदा की तरह आप का सहयोग मिलता रहेगा.

गुरमीत सिंह मीता—नई दिल्ली : दिल को कौन से लाकर में सेफ रखा जा सकता है?

उ० : जो फुदक-फुदक कर खुद ही निकल भागने के लिये तड़पता रहता हो, उसे कोई भी किसी भी 'स्ट्रांग रूम' के सात तालों वाले लाकर में सेफ नहीं रख सकता. और जब अपनी यह चीज किसी और की हो जाती है तो रो रो कर गाना पड़ता है.

ओम प्रकाश भाटिया, 'टीटू'—पहाड़ी धीरज : चाचा जी, क्या आप केवल पोस्टकार्ड पर लिखे प्रश्नों के उत्तर देते हैं.

उ० : हम अच्छे प्रश्नों के उत्तर देते हैं. चाहे कार्ड पर लिख कर भेजे गये हों, या लिफाफे में बन्द करके.

राजेन्द्र के. लाड—जबलपुर : यह कहावत आज के युग में कहां तक सत्य है?

"ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े तो पंडित होय,'

उ० : लेकिन इतना देख कर पथराव न सर पर होय, यहां तक सत्य है.

अशोक जौहरी, " गगन", —देहरादून : प्यारे चाचा जी, मुझे ऐसा कौन सा काम करना चाहिए कि लोग अपने प्यारे नेता राजनारायण को भूल कर मुझे ही महत्व दें?

उ० : सर के बल सड़कों पर उल्टे चलिये और नारा लगाइये कि आप धरती पर गिरते आसमान को रोक रहे हैं.

राजेन्द्र पाल अरोरा—रुद्रपुर : यदि यह दुनिया ही न बनी होती तो क्या होता?

उ० : दुनिया बनाने वाले को आज अपनी भूल पर पछताना न पड़ता, यह देख कर कि बैठे बिठाये उस ने दुनिया बना कर यह किस अड़ंगे में अपनी जान फंसा ली.

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : क्या मनुष्य को उम्र के साथ-साथ बदलते रहना चाहिए?

उ० : जी हां. केवल दीवाना को छोड़ कर केवल प्रकाश जी, जो आठ साल से लेकर साठ साल तक बराबर एक जैसा मनोरंजन करता है।



कहते थे दिल का तुम हो सहारा जवाब दो,
अब है कहां वो कौल तुम्हारा जवाब दो.
कश्ती जहां पे हम ने लगाई थी प्यार की,
छीना है तुम ने क्यों वो किनारा जवाब दो,
माना लबों पे मोहर है लेकिन कभी तो दोस्त,
आंखों से एक बार खुदारा जवाब दो.

आपस की बातें
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.

बालों की सुन्दरता का राज

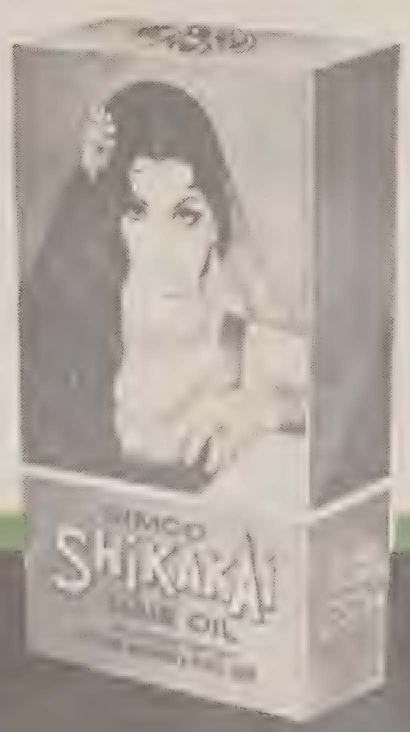
सिमको
शिकाकाई

केश तेल

मधुर सुगन्धित

लम्बे चमकीले और
काले बालों के लिए





शिमला केमिकल्स (प्रा०) लि०
5428, कूचा रहमान, चाँन्दनी चौक,
दिल्ली-110 006

लड़कियों को छेड़ने से बचाओ

लड़कियें को छेड़ने की घटनाओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है, बसों में तो लड़कियों के लिये सफर करना एक यातना बन गया है। सरकार, पुलिस और समाज सुधारक बहस करते-करते थक गये कि इस समस्या से कैसे निपटा जाये। कोई हल नहीं सूझ रहा है। हम यहां कुछ अचूक फार्मूले दे रहे हैं जिन्हें आजमाया जाये तो लड़कियों को छेड़ने की घटनाओं में चमत्कारी गिरावट आयेगी।



बदनाम कप

प्रसिद्ध व्यक्तियों की याद में आयोजित होने वाले टूर्नामेंट और कप प्रतियोगिता हम देखते या सुनते आ रहे हैं। खेलों के क्षेत्र में बदनाम व्यक्तियों के नामों पर भी कप प्रतियोगितायें होनी चाहिएं। आखिर प्रसिद्ध विद्वान अभिताभ बच्चन ने कहा भी है कि उनके अंगना में तुम्हारा क्या काम है और जो है नाम वाला वही तो बदनाम है। चलिये कुछ ऐसे कपों और शील्डों की कल्पना करके देखें कैसा लगता है।



देश में जिन दो प्रदेशों के बास्केटबाल फेडरेशनों में सबसे अधिक आपसी झगड़े मार-पीट चल रहे हों। उन प्रदेशों की वास्केटबाल टीमों के मध्य यह सीधा फाइनल खेल हो व विजेता को कप मिले।



बिल्ला ठिगना था और रंगा लम्बा। यह टूर्नामेंट लम्बे खिलाड़ियों की टीमों और ठिगने खिलाड़ियों की टीमों के बीच खेला जाये।



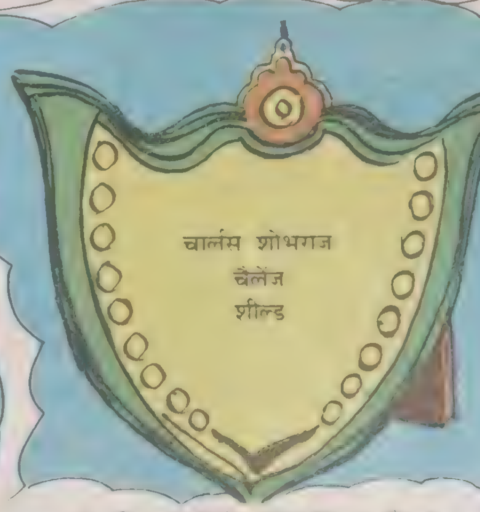
सीमेंट से बना यह कलात्मक कप मैच भारत की विभिन्न सीमेंट निर्माता कम्पनियों की क्रिकेट टीमों के मध्य खेला जाये, निर्धारित ओवरों के आधार पर।



यह ट्रॉफी डाकू छविराम से मिले हथियारों के स्टील को गला कर बनायी जाये और अखिल भारत स्तर पर शूटिंग प्रतियोगिता आयोजित कर विजेता को दी जाये।

इन्कमटैक्स विभाग और शिपिंग कार्पोरेशन की वालीबाल टीमों के बीच मैच आयोजित कर इस शानदार कप का निर्णय हो।





इस शील्ड का निर्णय पुलिस [illegible] और जेल विभाग के बीच गिल्ली डंडा मैच [illegible] कर किया जाये।


Relax
Jeans
the ego boosters


Dilip Vengsarkar

अप्रैल फूल दिवस

पहली अप्रैल फूल का दिन लोग कई प्रकार से एक दूसरे को मूर्ख बना कर मनाते हैं। देखा जाये तो हम में से हर कोई किसी न किसी को मूर्ख बनाता ही रहता है। इस को ध्यान में रख कर क्यों न प्रथम अप्रैल का मूर्ख दिवस एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनायें और ऐसे-ऐसे आयोजन किये जायें कि मूर्ख दिवस साकार हो जाये। मूर्ख दिवस की आयोजनाओं की कल्पनाओं का छोटा सा झरोखा प्रस्तुत है।



१ अप्रैल साधारण जन दिवस के रूप में मनाया जाये क्योंकि साधारण जनता ही है जो सबसे ज्यादा मूर्ख बनती है।



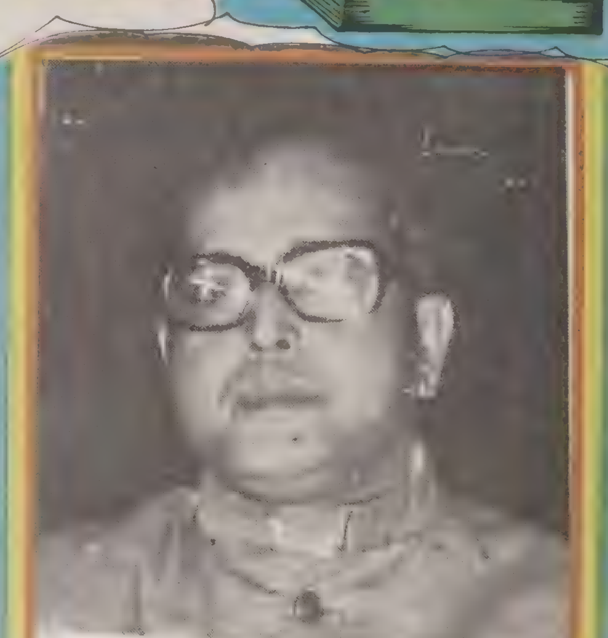
व्यापारी अपने इन्कम टैक्स रिटर्न फार्म १ अप्रैल को ही भरें। इसमें सारी सूचनायें सरकार को मूर्ख बनाने के प्रयत्न वाली ही तो होती है।



राजनैतिक पार्टियां अपने चुनाव घोषणा पत्र प्रथम अप्रैल को ही जारी करें। यह सारे वायदे वास्तव में जनता को मूर्ख बनाने के लिये ही होते है।



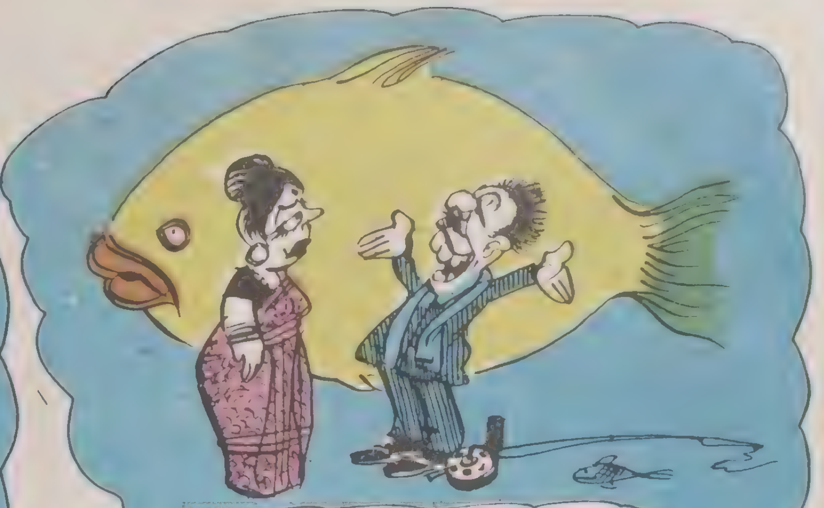
[illegible]



वित्त मंत्री बजट १ अप्रैल को पेश करें क्योंकि बजट तो प्राय मूर्ख बनाने के लिये ही होता है। असली कर तो बजट से पहले या बाद में ही लगते है।



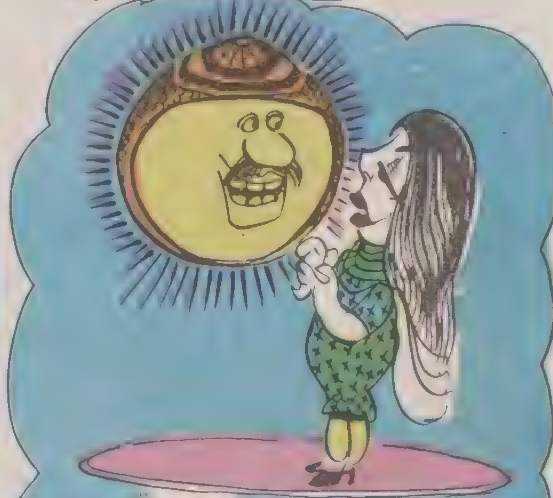
१ अप्रैल को मौसम विभाग के कर्मचारियों की फोटो अखबारों में छपे ताकि अप्रैल फूल दिवस को लोग यह तो जान जायें कि वर्ष भर उन्हें कौन उल्लू बनाता रहा है।



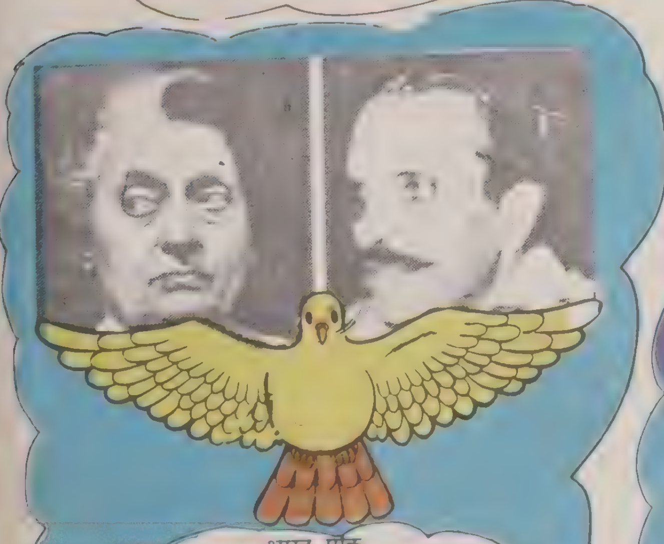
मछली पकड़ने के शौकिनों को १ अप्रैल को अनिवार्य रूप से फिशिंग के लिये भेजा जाये। शाम को आकर वह घर वालों को उस ह्वेल के बराबर मछली के बारे में बतायें जो बच निकली।



हर अफसर मातहतों को मूर्ख-गधा समझता है। १ अप्रैल को वह स्वयं गधे का मुखौटा पहन कर दफ्तर जाये और बाकी गधों का मनोरंजन करे।



१ अप्रैल को प्रेमी प्रेमिका से शादी का वायदा करे। यह वायदे कम ही पूरे होते हैं। अप्रैल फूल बनाने का मजा ऐसे ही सही रोमांस का पुट देकर बाद में प्रेमी मुकर गया तो प्रेमिका को ज्यादा मलाल नहीं होगा।



भारत पाक
युद्ध नहीं संधि

प्रथम अप्रैल को यह संधि हो जानी चाहिए। टूट जाये तो बाद में कह सकते हैं हमने तो अप्रैल फूल बनाया था।



मगर शादियों की बात चीत १ अप्रैल को हो। बाद में दहेज पर झगड़ा होगा तो वधू पक्ष कह सकता है दहेज के यह वायदे तो हमने अप्रैल फूल बनाने के लिये [illegible] बाद में [illegible] में इस बात का [illegible] फायदा ही होगा। [illegible]


अधिकतर पत्नियां अपने पतियों को मूर्ख समझती हैं। १ अप्रैल अतिरिक्त करवा चौथ के रूप में मनायें व गधे की आरती उतारें।
हिन्दु महासभा व जमाते इस्लामी प्रथम अप्रैल को मिल कर बैठें व आपस में कभी न लड़ने की प्रतिज्ञा करें।
प्रेमिका भी प्रेमी से अपनी वफाओं के वास्ते १ अप्रैल को ही दे। यह रोमांटिक अप्रैल फूलिंग होगी।
बीस फुट लम्बा शेर था वह...
१ अप्रैल को शिकारी अपनी कहानियां सभाओं में सुनायें। शिकारियों की ज्यादातर कहानियां कपोल कल्पित होती हैं।
केवल प्रथम अप्रैल को ही सरकारी आंकडे प्रसारित किये जायें जिनके आधार पर दावा किया जाता है कि महंगाई कम हो रही है व अपराध घट रहे हैं। अच्छा मजाक रहेगा।
भारतीय हॉकी संघ
अगले अंतरराष्ट्रीय मुकाबले के लिये हॉकी संघ टीम की घोषणा १ अप्रैल को करे और आशा व्यक्त करे कि इस बार तो गोल्डन कप हमारा ही होगा।

यह सच है!

मौज प्रेमियों का देश

—सरल

खाओ, पियो और मौज करो—यह कहावत आपने भी सुनी होगी! यह कहावत सुनने में बहुत अच्छी लगती है. मगर सही मायनों में दुनिया में आमतौर पर कोई भी आदमी केवल खाने, पीने और मौज के जरिए जिंदगी के दिन नहीं गुजार सकता. क्योंकि जिंदा रहने के लिए हर किसी को कोई न कोई मोटा-महीन काम करना ही पड़ता है.

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि एक देश ऐसा भी है, जहां के निवासी सिर्फ मौज करते हैं. इस देश का नाम 'ला' है. अमरीका के पास, खुले समुद्र में यह एक छोटा-सा द्वीप है. यहां की जनसंख्या केवल पच्चीस हजार है. इस देश पर न किसी दूसरे देश का राज्य है, न यहां का अपना कोई राजा है.

न यहां कोई पुलिस है, न सेना है! दस साल पहले यहां एक सिपाही होता था. अब उसे भी पेंशन दे दी गई. न याहं कोई अदालत है, न कचहरी है. हो भी कैसे! आज तक यहां किसी ने अपराध किया ही नहीं है! कम से कम ऐसी वारदात (घटना) तो यहां कभी नहीं हुई, जिसे 'गैर-कानूनी' कहा जाए.

लोग यहां सही मायनों में खाते हैं, पीते हैं और मौज करते हैं. इसके सिवाय न वे कुछ करते हैं, न करना जानते हैं! मजे की बात तो यह है कि इस अनोखे द्वीप को उन लोगों ने आबाद किया था, जो दो सौ वर्ष पहले समुद्री जहाजों पर डाका डालते थे.

यहां के निवासियों की औसत आमदनी लगभग पांच हजार रुपये महीना है. आश्चर्य की बात यह है कि इस आमदनी के लिए किसी को कोई काम नहीं करना पड़ता.

इस द्वीप का प्रबंध पांच 'बड़े' आदमी करते हैं, जिनमें एक राष्ट्रपति होता है. दूसरा प्रधानमंत्री और तीन उसके सहायक मंत्री होते हैं. राष्ट्रपति का चुनाव 'ला' के लोग हर वर्ष करते है. यहां का कोई भी नागरिक एक वर्ष के लिए राष्ट्रपति बन सकता है—केवल एक वर्ष के लिए! उसके बाद फिर उसे कभी नहीं चुना जा सकता। खास बात तो यह है कि कोई भी आदमी यहां आसानी से राष्ट्रपति बनना पसंद नहीं करता. जब किसी से लोग बहुत ज्यादा आग्रह करते हैं, तो वह 'मजबूरन' इस पद को स्वीकार कर लेता है. इसका कारण यह है कि यहांके राष्ट्रपति को न कोई 'वेतन' मिलता है, न कोई विशेष सुविधा या भत्ता मिलता है. उसके लिए अलग से किसी निवास स्थान का प्रबंध भी नहीं किया जाता. उसके 'सहायकों' को भी खर्चे के लिए कोई रकम नहीं मिलती. वह आदमी जहां रहता है, वही मकान एक वर्ष के लिए 'राष्ट्रपति भवन' बन जाता है! साल भर 'राष्ट्रपति' की हैसियत से वह दिन-रात अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने में व्यस्त रहता है, इसलिए बाकी उम्र वह उस 'थकान' को दूर करने में ही अपना 'कल्याण' समझता है.

जहां तक प्रधान मंत्री और मंत्रियों की नियुक्ति का सवाल है, वह भी काफी अजीब मामला है. ये मंत्री दूसरे देशों से 'आयात' किए जाते हैं, जो केवल पांच साल के लिए 'नियुक्त' होते हैं. पांच साल बाद उन्हें ढेरों उपहार देकर उनके देश वापस भेज दिया जाता है. आश्चर्य की बात तो यह कि फिर उन्हें कभी इस द्वीप में आने की अनुमति नहीं दी जाती

यहां सोने, चांदी और हीरे की इतनी खाने हैं कि हर आदमी को बिना हाथ-पांव हिलाए पांच छः हजार रुपये हर महीने मिल जाते हैं. इन खानों में काम करने वाले कर्मचारी बाहर से बुलाए जाते हैं. आदमी चाहे आठ साल का हो या अस्सी साल का, हर किसी को बराबर रकम महीने के महीने पहुंचा दी जाती है.

'ला' द्वीप में कोई अस्पताल नहीं है. केवल एक वैद्य है, जो वहीं का निवासी है. पूरे देश का वही इलाज करता है. दस वर्ष पहले एक डाक्टर यहां बाहर से आया था, लेकिन उसी दिन उसे खदेड़ कर बाहर कर दिया गया था.

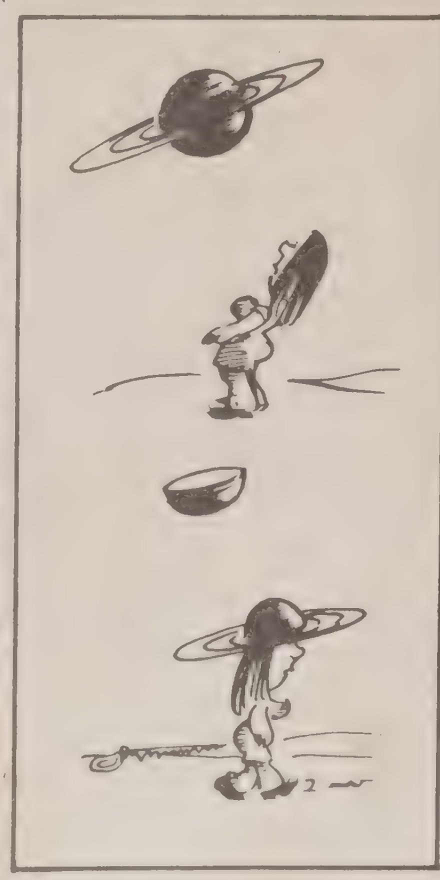
यहां के कानून के अनुसार अगर कोई अपनी 'जरूरत' पूरी करने के लिए चोरी करे, तो उस 'चोरी' को 'अपराध' नहीं माना जाता। उसके बजाय समाज को दोषी ठहराया जाता है कि उसने ऐसी परिस्थिति पैदा ही क्यों की कि एक आदमी को अपनी 'जरूरत' पूरी करने के लिए 'चोरी' का सहारा लेना पड़ा? इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश की पूरी आमदनी को हर छोटे-बड़े में बराबर-बराबर बांट दिया जाता है.

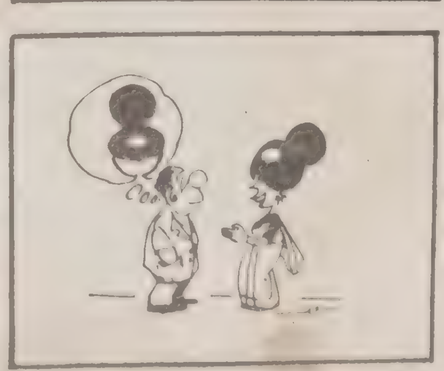
यहां पढ़ना लिखना बिल्कुल 'जरूरी' नहीं समझा जाता!, यहां के निवासी कहते हैं—''हमें पढ़ने लिखने की जरूरत ही क्याहै? हम क्यों अपनी शक्ति को 'किताबों' में नष्ट करें?''

पाठशालाओं की जगह यहां व्यामशालायें हैं. हर आदमी को अपनी सेहत और तंदुरुस्ती का पूरा-पूरा एहसास (ज्ञान) है. जगह-जगह आपको अखाड़े में कुश्ती करते लोग नजर आयेंगे.

औरतों को भी अपनी सेहत बनाने का पूरा-पूरा 'शौक' है! वे रसोई घर में सिर खपाने की बजाय 'महिला व्यायामशालाओं में कुश्ती लड़ना ज्यादा पसंद करती हैं. हर रोज पका-पकाया खाना बाहर से आता है. औरतों का काम सिर्फ खाना है, पकाना नहीं!

यह है ''मौज प्रेमियों का देश!'' एक ऐसा अजीब देश, जहां के निवासी सिर्फ मौज करते हैं. काम करने से लिए लोग दूसरे देशों से बुलाए जाते हैं.





खेल खेल में

रणजी चैम्पियन दिल्ली

के खिलाड़ियों के इस सीजन के रणजी मैचों के आंकड़े

इस वर्ष मार्च में रणजी ट्रॉफी फाइनल में प्रथम पारी की बढ़त के आधार पर कर्नाटक के ७०५ रनों के विशाल स्कोर के मुकाबले ७०७ रन आठ विकेटों पर दिल्ली ने बना कर एक ऐतिहासिक विजय प्राप्त की। इस अविश्वसनीय विजय को संभव बनाने वाली टीम के खिलाड़ियों के पूरे सीजन के आंकड़े प्रस्तुत हैं।

बल्लेबाजी

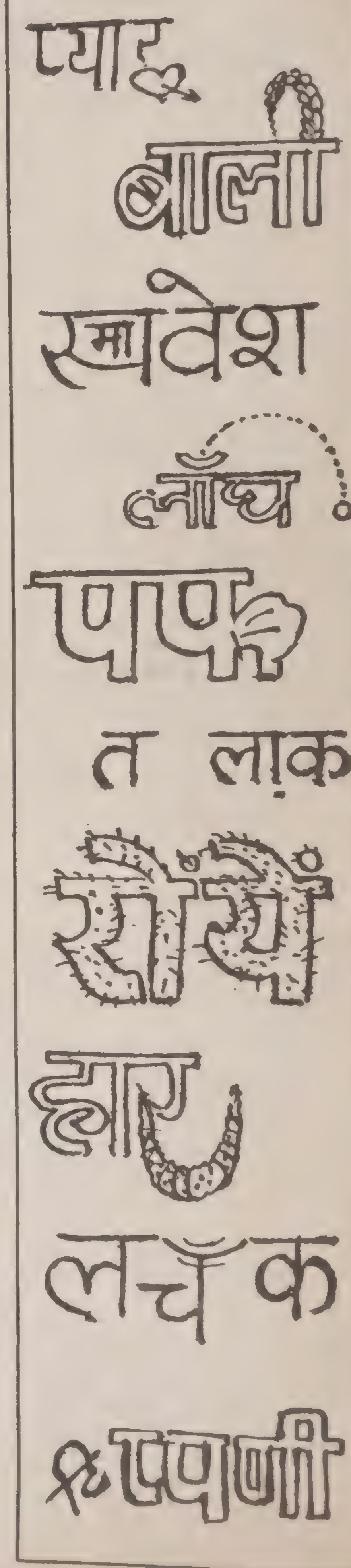
खिलाड़ी	मैच	पारियां	नाट-आउट	रन	उच्चतम	औसत	शतक
मदनलाल	६	६	३	२९२	११६	९१.३३	२
राकेश शुक्ला	७	८	४	२८१	१०३	७०.२५	१
राजेश पीटर	३	३	२	६७	६७	६७.००	—
रमन लाम्बा	७	१०	१	४९२	२०५	५४.६६	१
मोहिन्दर अमरनाथ	७	८	०	३७२	१८५	४६.५०	१
कीर्तिआजाद	६	८	०	३५९	१३२	४४.१४	१
सुरेन्द्र अमरनाथ	७	९	१	२८९	१३१	३६.१२	१
गुरशरण सिंह	५	६	१	१६८	१०१	३३.६०	१
सुरेन्द्र खन्ना	७	८	०	२५६	११९	३२.००	१
चेतन चौहान	६	१०	०	२४०	८३	२४.००	०
मनिन्दर सिंह	४	१	१	२	२	२.००	—

गेंदबाजी

	गैदे	मेडन	रन	विकेटें	औसत	५ विकेटेपारी	१० विकेटे मैच में
मनिन्दर सिंह	११७३	९३	५८३	४०	१४.५०	४	१
मोहिन्द्र अमरनाथ	७९७	४४	३४०	१६	२१.२५	२	—
मदन लाल	८१५	३९	३६७	१५	२४.४६	—	—
चेतन चौहान	११४	२	५९	२	२९.५०	—	—
कीर्ति आजाद	६४८	२३	२७१	९	३०.११	—	—
राकेश शुक्ला	३९२	६४	५२४	१४	३७.४२	—	—
राजेश पीटर	३३०	१८	११७	३	३९.००	—	—



बोलते अक्षर



परोपकारी


अरे परोपकारी! ज़रा सुनो!
कहिए जमुनादास जी क्या बात है?
क्या बताऊँ? आजकल व्यापारिक परेशानियों के कारण ब्लड-प्रेशर हाई रहने लगा है!
आपको अपने व्यापार के अलावा दूसरी जगहों में भी रुचि लेनी चाहिए, जैसे क्लबों में जाना, फ़िल्में और नाटक देखना, आदि-आदि.....!
छः महीने बाद-
अरे! जमुना-दास जी आप इस हाल में?
सत्यानाश हो तेरा परोपकारी धोखेबाज़, मक्कार, पाजी, नमक हराम, आस्तीन के साँप......!
क्लब, फ़िल्मों, नाटकों के चक्कर में मेरा सारा व्यापार ठप्प हो गया..... यह सब तेरी तरकीब थी!
सुखवंत

रिजल्ट

— जतन

अचानक बम बिस्फोट हुआ। धमाके के साथ आवाज चारों तरफ फैल गयी। कुछ तो आवाज सुनकर सहम गये, कुछ गिरे पड़े तो कुछ दौड़ने लगे। डरिये नहीं, कुछ नहीं हुआ बस हाई स्कूल का रिजल्ट आऊट हो गया। यह खबर ऐसी फूट निकली जैसे श्रीकान्त टेस्ट टीम में भर्ती हो गया।

मैं और मेरा भाई नरेन्द्र दोनों ने परीक्षा दी थी। मैं तो पढ़ने में तीस मारखां था परन्तु वह बड़ा ही होशियार था। उसे पक्का भरोसा था कि उसे फेल करने वाला कोई नहीं है। मुस्कराकर मेरे से बोला अरे जा देखिया ना रिजल्ट। मैंने अनिष्ट की आशंका को ध्यान में रखते हुए कहा "जो आशा हो भाई साहब।" बस अपनी पतलून चढ़ाई और इस तरह जैसे की पहली बार बैंटिंग करने एक लाख आदमियों के समक्ष ईडन गार्डन में प्रवेश कर रहे हों। रास्ते में मिले गांव के लोग जो इतना पूछना चाहते हैं कि पास हुए अथवा फेल। देखते ही बोले सुना है बिटुआ तुम्हारा रिजल्ट निकल गया थोड़ी देर बाद की अपनी हालत का ध्यान रखते हुए मैंने नजर नीची करके सिर ऐसे हिला दिया जैसे की बुढ़ापे में कुछ लोगों की गर्दन अपने आप हिलने लगती है और फिर अपने कदम आगे की तरफ बढ़ने लगे।

बार-बार एक ही समस्या रह-रह कर दिमाग में आ रही थी कि रिजल्ट को कैसे देखा जाएगा। यह सब ऐसे लग रहा था जैसे जाते ही पहली बाल बायम की खेलनी हो। खैर धीरे-धीरे करके कदम बढ़ते गए और अन्त में क्रीज पर पहुँच गए। लालाजी जरा अखबार दिखना। उधर लालाजी आंख लाल किये बैठे थे। तिलमिला कर चिढ़ाने की मुद्रा में बोले 'अखबार दिखाना·········। अरे मैंने कहा डूब मरो कहीं जाकर। पूरा का पूरा स्कूल फेल हो गया। बेड़ा गर्क हो इनका, मेरे तो अखबार के पैसे भी मिट्टी में मिल गए।' मेरा अन्तर्मन यह सुनकर हंस उठा। जैसे की क्रीज पर पहुँचते ही साथी बल्लेबाज के प्रकाश की अपील को अम्पायर ने स्वीकार कर लिया हो। यह सुनकर गांव की तरफ दौड़ पड़ा। बहुत खुश था। रास्ते में लोगों ने पूछा क्या हुआ रे? हुआ क्या, बबुआ अबके तो वे भी फेल हो गए जो कहते थे "है कोई माई का लाल जो फेल करके दिखाये, आखिर मेहनत जो करते हैं।" और हाँ देखिए ना मेरे भाई नरेन्द्र को पूरी साल घिस-घिसकर मर गया। एक मैं हूँ पूरे साल मस्ती की छानी। अन्त में रिजल्ट दोनों का बराबर, वह भी फेल और मैं भी फेल। कदम ऐसे बढ़ रहे थे जैसे की कोई 200 रन की पारी खेलकर लौटे हों। मेरे फेल होने का थोड़ा सा गम भाई साहब के फेल होने की खुशी के नीचे दबकर रह गया। इस बात की चिन्ता कि घर वाला कोई कुछ कहेगा बस खत्म ही हो गयी थी। क्योंकि वे अब आराम से सोच सकेंगे कि जब नरेन्द्र ही फेल हो गया तो मेरी तो औकात ही क्या है।

घर में घुसते ही मुलाकात भाई साहब से हुई। पूछा क्या हुआ तेरा? मेरा·········बल्कि यह पूछिये कि आपका क्या हुआ। ज्यादा खुश मत होइये। आप भी फेल हैं फेल। मेरी बात का ऐसे विश्वास नहीं हुआ जैसे पैंड एन्ड बैट के कैच पर कभी-कभी अम्पायर की उंगली का नहीं होता। परन्तु मेरी बात तो अम्पायर की उंगली की तरह ही थी उठ गयी तो उठ गयी। हँसी तो उनकी ऐसे गायब हो गयी जैसे छुइमुई के पौधे को उंगली दिखा दी हो। बोले, नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मैं खुद जाकर ही देखूँगा।

यह कहकर घर से निकल पड़े। निकले तो इस तरह से थे जैसे मुहम्मद अली चौथी बार विश्व चैम्पियन बनने के लिए रिंग में कूद पड़ा हो। परन्तु लालाजी के उन्हीं बाण वाक्यों ने उनको ऐसा धराशायी कर दिया जैसे की लैरी होम्स के घूसों ने अली को। बुझे से चेहरे को लेकर घर लौट रहे थे, रास्ते में भी गांव के लोगों के मधुर वाक्यों से उनका स्वागत हुआ। कुछ कह रहे थे। अब पता चला है भेड़िये की खाल में भेड़ के अलावा कोई नहीं था तो कुछ बोल रहे थे यहाँ तो तेल की लाइन में लग-लगकर मर गए, उन्होंने तो बोल दिया, फेल हो गये।

मैं तो बस चावी भरे गुड्डे की तरह उछल रहा था। अगर कोई देखता तो कहता, "लगता है लड़का फस्ट डिवीजन में पास हुआ है।" आखिर कोई कुछ कहने वाला तो था हीं नहीं उधर हमारी मां ने तो बस भगवान के चरणों में ही बसेरा डाल दिया। बोली अगर मेरे बच्चे पास हो गये तो चवन्नी का प्रसाद और अधिक चढ़ा दूंगी, अपने पास रखी सभी चद्दरों को तेरे चरणों में अर्पित कर दूंगी। भाई साहब कह रहे थे ऐसा नहीं हो सकता है कुछ ना कुछ बात जरूर है। मैं भी तो अपनी फार्म में था बोला, जो हो गया वह अब और क्या होगा।

ऐसे ही दो तीन दिन बीत गये अचानक प्रधानाचार्य जी गांव में आये और बोले 'लड़कों के द्वारा दी गयी फीस किन्हीं कारणों वश रुक जाने के कारण पूरे स्कूल का रिजल्ट रोक दिया गया था, मैं अभी-अभी रिजल्ट लेकर लौटा हूँ उसमें नरेन्द्र तो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण है और महेन्द्र (मैं) फेल'। बस फिर क्या था दशा ही बदल गयी। मां अपनी चद्दरों की तरफ और भाई साहब मेरी तरफ, मैं नीचे की तरफ और मास्टरजी आश्चर्य से हम सबकी तरफ देख रहे थे। भाई साहब तो इस तरह खुश हो रहे थे जैसे उन्हें कोई खोई चीज वापस मिल गई हो।


सिलबिल पिलपिल
गरीबचन्द की बरात
भाई जी जानते हो मैंने हाथ में जो पकड़ रखा है वह क्या है। यह गरीबचन्द की चिट्ठी है। मैंने सोचा गरीब चन्द को चिट्ठी कौन लिख सकता है। जरा खोल कर पढ़ कर देखूं तो।
गरीबचन्द दूसरा कोई थोड़े ही है। अपना ही याड़ी है। जानते हो किसका ख़त है? एक चूहिया ने लव लैटर लिखा है।
छिः छिः दूसरों की चिट्ठी पढ़ना अच्छी बात नहीं है।
लव लैटर? जभी आजकल गरीबचंद खोया-खोया सा रहता है।
चुहिया ने अपना नाम मोना लिखा है। और अपना फोटो भी भेजा है बड़ी प्यारी गोल मटोल सी चुहिया है। ऐसी बातें लिखी हैं कि पढ़ते-पढ़ते मुझे भी गुदगुदी होने लगी है।
ऐह! चुहिया का नाम मोना है। हमारा गरीबचन्द इश्क में गिरफ्तार हो गया है। मैं कई दिनों से देख ही रहा था कि गरीबचन्द गुमसुम बैठा रहता है। रात को छत पर जाकर चांद को ताकता रहता है। उसने हमारे कपड़े कुतरने छोड़ दिये थे। ठंडी ठंडी एक-एक फुट लम्बी सांसें लेता रहता है।
लिखा है, मेरे सपनों के राजा प्रियतम गरीबचन्द, मेरे दिल की धड़कनों के सोल प्रोपराइटर, जब से मैं तुम से प्रेम करने लगी हूं मेरी जिन्दगी ही बदल गयी है। रातों को नीद नहीं आती, आंखों के सामने हमेशा तुम्हारी प्यारी सूरत घूमती रहती है।
आजकल गरीबचन्द दिन भर रेडियो के सामने बैठा गम के गाने सुनता रहता है एक मिनट के लिये भी रेडियो के सामने से नहीं हटता। इश्क में देखो आदमी किस तरह दीवाना बन जाता है।
मैं चुपचाप जाकर लैटर उसके बिल में डाल देता हूं।उसे पता भी नहीं लगेगा कि हमने उसका लैटर
ख़ोल कर पढ़ लिया है। सफाई से गौंद के साथ लिफाफा पहले जैसा ही जोड़ दिया है।
हम उसको बतायेंगे भी नहीं कि हमने उसका लैटर खोल कर पढ़ लिया है और उसका राज हम जानते हैं। देखें वह क्या क्या गुल खिलाता है।
जब वह लैटर पढ़ रहा होयेगा तो उसकी शक्ल देखने लायक होगी।



आह! मेरी मोना डार्लिंग का लैटर! चिट्ठी से कैसी खुश्बू आ रही है। मीठी-मीठी, प्यारी-प्यारी !
मेरे दिल की धड़कनों के राजा
कितनी तड़फ छिपी है प्रेम पत्र में.
भाई जी देखो गरीबचन्द पत्र पढ़तेपढ़ते हवा में उड़ने लगा गया।
प्यार चीज ही ऐसी है—ईसान हो या जानवर हवा में उड़ने लगता है।
देखो प्रेम में कितनी ताकत होती है। बारह किलो के बट्टे से इसकी पूंछ मैंने बांध दी तब जाकर हवा में उड़ना बन्द हुआ। बट्टे से न बाधता तो यह उड़ता-उड़ता एपल सेटेलाइट के साथ मिल जाता।
याड़ी गरीबचन्द क्या बात है? आजकल तू बदला-बदला सा लगता है, रोटी भी कम कुतर रहा है। डाइटिंग कर रहा है या तेरा हाजमा खराब हो गया है? हाजमे की गोली वोली लाऊं ?
प्यारे हमें पता है माजरा क्या है। हम खत का मजमून लिफाफा देख कर भांप लेते हैं जब SSS इश्क किसी से होता है दर्द सा दिल में होता है
भाई जी एक बात मेरे दिमाग में आई है कि यह इस तरह भूखा रहेगा तो मर जायेगा। इसको भूख ही नहीं लग रही है। किसी तरह इसको खाना तो खिलाना पड़ेगा.
पकड़ कर जबरदस्ती ग्लूकोज का पाइप गले से नीचे उतार दिया जाये। भूख हड़ताल पर बैठे नेताओं को भी मरने से बचाने के लिये ऐसा ही किया जाता है। घुसेड़ दू ट्यूब इसके के मुह में ?
क्या करता है बेवकूफ? यह भूखहड़ताल पर थोड़े बैठा है?


यह प्रेम का नाजुक मामला है। इसमें ऐसे बेदर्द तरीके आजमाने की सोचने की भी जरूरत नहीं है। हम सही तरीका सोचेंगे।हम इसके यार हैं,हम इसकी मदद करेंगे।
अगर मोना चुहिया और इसमें प्रेम हो गया है तो एक ही रास्ता है.हम इन दोनों की शादी करवा देंगे। मोना को दुल्हिन बना कर किंग साइज सिगरेट की खाली डिब्बी के डोले में बिठा कर ले आयेंगे। दो प्रेमियों को मिला देंगे।
प्यारे गरीबचन्द,तू चिन्ता मत कर। हम तेरे भाई जिन्दा हैं। जिस चुहिया के प्यार में तू दीवाना बन गया है उसे हम भाभी बना कर ही दम लेंगे। दुनिया में हम दोनों के सिवा तेरा और है ही कौन ? तेरी सगाई और शादी की बातचीत हम ही करेंगे। जमाने से लड़ना भी पड़े तो हम जान पर खेल कर मोना को लाकर तेरे सामने खड़ी कर देंगे।
थम दोनों मेरे सच्चे दोस्त हो।
अपना एक ही यार है इसकी शादी में कोई कसर नहीं रहनी चाहिए।शादी ब्याह में बड़ी २ बातें तय करनी पड़ती है। खरीदारी करनी है। खरीदारी की चीजों की लिस्ट होनी चाहिए।
यह शादी ब्याह का मामला है,कोई मजाक नहीं है,बड़ी दौड़ धूप करनी है हमें!बैंड बाजे वालों को बुक करना है। टैंट वालों से बात करनी है। अपने लिये भी कपड़े बनवाये हैं।
दूसरे ही दिन सिलबिल और पिलपिल ने पगाड़ियां पहन अचकन में सजेधजे, शहनाई पर भीम पलासी बजाते, हाथ में सगाई का थाल जिसमें मिठाई, नारियल ग्यारह रुपये और मोना के लिये शादी का जोड़ा था लेकर मोना के बिल की ओर प्रस्थान किया।बाकी हाल अगले अंक में।

पृष्ठ १४ से आगे

किसी समय यहां वापिस आ जायेंगे, श्याम तुम इला तथा महाराज कुमार की खोज करो क्यों कि यह दोनों ही शहर के एक ही हिस्से में रहते हैं. माहिन्दर और मैं दूसरे लोगों से मिलने का प्रयास करेंगे.

''परन्तु मैं उनसे पूछूंगा क्या ?'' श्याम ने प्रश्न किया ''महाराज कुमार से पूछना कि चंदू घंटे ने उन्हें घड़ी भेजी थी और क्या उन्होंने नीचे चिपके संदेश को देखा था और उसका क्या किया था ? तथा उन्होंने घड़ी को फेंक क्यों दिया था ?'' तुम घड़ी अपने साथ ले जाओ तो ठीक रहेगा, हो सकतां है उन्हें याद न हो, तुम किस घड़ी के विषय में पूछ रहे हो ?'' राजू ने श्याम को बताया.

''ठीक है, परन्तु मैं मिस इला मेहरा से क्या पूछूं ?'' श्याम ने पूछा.

''उन से पूछना कि क्या चंदू घंटा उनके पास कोई संदेश छोड़ गये हैं ? राजू बोला, ''शायद तुम्हें उन्हें विश्वास दिलाने को कि तुम सही आदमी हो घड़ी दिखानी पड़े ?''

''परन्तु हो सकता है तुम्हें भी गोवर्धन और मीरा को दिखाने के लिये घड़ी की आवश्यकता पड़ जाये ?'' ''मैं असली घड़ी जैसी दिखने वाली एक घड़ी अपने साथ लेता जाऊंगा, चान्स तो है कि हमें घड़ी दिखानी ही नहीं पड़ेगी केवल उसका जिकर ही करना काफ़ी होगा फिर भी कबाड़ी घर में बहुत सी मि. घंटे की घड़ी जैसी दिखने वाली घड़ियां मौजूद हैं.

''अच्छा बताओ सब बात ठीक से समझ आ गई यदि हाँ तो मेरे विचार से हमें चल देना चाहिये. श्याम तुम और हरी तुरन्त चले जाओ, माहिन्दर को और मुझे बरखसिंह के कार लाने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी'', ''एक मिनट रुको. अचानक महिन्दर बोला'' राजू तुम एक महत्वपूर्ण बात भूले जा रहे हो, हम अभी नहीं जा सकते.

राजू ने आंखें मिचकाते हुए कहा ''क्यों नहीं ?''

''क्योंकि अब खाने का समय हो गया है'' माहिन्दर ने भोला सा मुंह दिखाते हुए कहा.

रहस्य पर रहस्य

अब हम अपने निर्दिष्ठ स्थान पर पहुंचा ही चाहते हैं'' घरों के नम्बरों को देखते हुए श्याम बोला. हरी अपने पिता की पुरानी कार चला रहा था, ''वो देखो मि० महाराज कुमार का नम्बर है!''

हरी ने कार खड़ी की और दोनों उतर कर चल पड़े. ''शहर के इस भाग में रहने के लिये काफी धन की आवश्यकता होती है,'' हरी ने पर की पत्थर से बनी सड़क पर चलते हुए टिप्पणी की.

श्याम ने सहमती में सिर हिलाया उसके हाथ में जिप लगा घड़ी वाला बैग था. वह सोच रहा था कि क्या वाकई यह चिल्लाने वाली घड़ी इसी घर की है ?

दरवाज़ा खुला और एक महिला ने भीतर से झाँका वह जवान न थी और कुछ परेशान और थकी प्रतीत होती थी.

''हां बोलिये क्या चाहिए ?'' वह बोली ''यदि तुम स्काउटों के लिये चंदा इकट्ठा कर रहे हो तो मैं पहले ही दे चुकी हूं.''

''नहीं जी, श्याम ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया ''मैं पूछना चाहता हूं कि क्या मैं मि. महाराज कुमार से मिल सकता हूं ?''

''नहीं तुम मिल नहीं सकते, वे बीमार हैं और कई माह से अस्पताल में हैं.''

''मुझे यह जानकर अत्यन्त खेद हुआ, श्याम ने सोचते हुए उत्तर दिया. यदि महाराज कुमार अस्पताल में हैं तो वे घड़ी फेंक नहीं सकते थे. परन्तु श्याम जानता था राजू बात इतनी आसानी से समाप्त नहीं होने देगा इसलिये हिम्मत कर उसने एक प्रश्न और पूछा, ''क्या मि. महाराज कुमार का उपनाम राजा है श्रीमती जी ? महिला श्याम की ओर देखती ही रह गई. श्याम बहुत ही विनम्र था तथा एक अत्यन्त सभ्य लड़का था अन्यथा ऐसा प्रतीत होता था कि महिला उसके मुंह पर ही दरवाजा बन्द कर लेती. ''हां!'' है तो, परन्तु तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो ?'' वह बोली ''क्या यह कोई मजाक है या खेल है ?'' श्याम ने शीघ्रता से उत्तर दिया कि ऐसा कुछ भी नहीं है. ''हम एक घड़ी के विषय में खोज कर रहे हैं श्रीमती जी, मैं आपको दिखाता हूं,'' उसने घड़ी जिप वाले बैग से निकाल कर उन्हें दिखाई, ''मैं जानना चाहता हूं क्या आपने इसे कभी देखा है ''यह भयानक घड़ी!'' वह बोली ''जरा सोचो ऐसी भयानक चीज को मेरे पति के पास उनकी बीमारी की हालत में भेजना ? यदि उन्होंने इसे कहीं सुन लिया होता तो उनकी तबियत और भी खराब हो जाती, वह डरावनी चीख!''

श्याम और हरी ने एक दूसरे की ओर देखा, आखिर वे ठीक स्थान पर ही पहुंचे हैं.

''तो मि. चंदू घंटे ने यह घड़ी मि.

शेष पृष्ठ ३८ पर

मदहोश




फैण्टम-जंगल शहर
किट और हेलोईस के लिये बच्चों का कमरा और यह कुछ और कमरे किसी और आवश्यक पूर्ती के लिये
यह हमारा सोने का कमरा है रस्सेवाले लोगों ने इसमें खोपड़ी गुफा की नकल की है। उनका विचार है इससे हमें अपने घर जैसा महसूस होगा।
!
© 1980 King Features Syndicate World rights reserved
क्या यह भी उन्होंने ही बनाया है ?
नहीं, यह शहर के नलवाले ने बनाया है, रस्सेवाले लोग भी ठीक ऐसा ही अपने वृक्षों के लिये बनवाना चाहते हैं।
रस्सेवाले लोगों ने हर बात का ध्यान रखा है।
वृक्षधर के भीतर।
यहां से मीनार को चोटी पर जाया जाता है।
वह देखो फराका . . . यहां से हम मीलों दूर तक देख सकते हैं।
डियाना अब तुमने सारा घर देख लिया है। रस्सेवाले लोग और रेक्स और मैं यह जानने के उत्सुक हैं कि तुम्हें घर कैसे लगा ?
अच्छा, डियाना तुम्हारा अपने नये घर के विषय में क्या विचार है ?
हवा में हमारे महल के विषय में ? यह अति सुन्दर और अनोखा है।
मुझे बहुत प्रिय है। मुझे बहुत प्रिय है।
मुझे बहुत बहुत प्रिय है।
मुझे अत्यन्त प्रिय है
मुझे बहुत प्रिय है
उसे बहुत प्रिय है
प्रिय ?
मतलब बढ़िया।
बढ़िया बढ़िया।
उसे बहुत प्रिय है
मामा . . . डाडा।



मुझे अपना सोने का कमरा तथा बच्चों का कमरा एक बार फिर देखना है. मैं परदों और कालीनों के लगाने की प्रतीक्षा नहीं कर सकती।
ओह ! यह अति सुन्दर है परी कथाओं जैसा हवा में लटका महल।
मैं तुम्हें एक राज बताती हूं.
मैं छोटी सी लड़की थी तभी से एक वृक्षघर में रहना चाहती थी। परन्तु मैं ने ऐसे सुन्दर महल का तो स्वप्न में भी न सोचा था।
चिन्ता न करो, तुम पूर्ण सुरक्षित हो, फराका हमारा ध्यान रखेगा।
आओ आकर हमारा सुन्दर नया घर देखो।
जब तक रुको जब तक मैं मामा को बताऊं की हम वृक्ष पर रहते हैं।
हूं . . .उसमें मजा आयेगा।
ओह — ओह।
मामा . .
डाडा. .
वृक्षधर में।
ये गोगो और टोटू के और उनके पतियों के क्वार्टर हैं जो इनके साथ रहना चाहते चाः
अम्दुत।
यह तो बहुत ही कमाल है, तुम तो कुछ भी नहीं भूले
मेरे बारे में क्या विचार है ?
मेरे ख्याल से मैं तुम्हें भूल गया हूं रेक्स। तुम ऊपर चलो।
?!
अंकल वाकर यह कहां जाता है ?
तुम्हारे गुप्त कमरों को जाता है।
मेरे ?
चलते-फिरते भूत के लिये।
रेक्स यह सब तुम्हारा है।
वाह।


गोगो और टोटू ने हमारे लिये भोजन तैयार कर लियां है। कुर्सी मेज तो नहीं हैं. परन्तु हम फर्श पर बैठ कर ही भोजन करेंगे।
जंगल के तरीके से, आओ तुम सब भी आकर शामिल हो जाओ।
तुम्हें कुर्सी मेजों की क्या आवश्यकता है?
रेक्स तुमने इन चीजों का कभी इस्तेमाल नहीं किया, तुम सीख जाओगे।
छुरी, कांटे चम्मच भी।
बहुत जल्दी नहीं, आशा है।
रस्सेवाले लोगों ने किट और हैलोईस के लिये ये झूले बनाये हैं।
वे इन्हें बहुत प्यार करते हैं.
खीखी --- खी---खी---
रेक्स अपने गुप्त कमरे में आराम से सोना।
अवश्य, गुड नाईट।
डियाना हमें इन खालों से ही काम चलाना पडेगा।
खूब काम चलेगा मि. चलते फिरते भूत
वृक्ष घर में रात्रि।
यहां तो स्वर्ग का आनन्द है, पेड़ों पर हिलते हुए तो मैं चिडिया जैसा महसूस कर रही हूं.
किसी ने डेविल को जगा दिया है.
क्या है।
नहीं कुछ फिकर की बात नहीं है हाथियों का कोई झुंड है.
वृक्ष घर की रात्रि जब कि सब निद्रामग्न है.
ZZZ
ZZZ
परन्तु सारा जंगल सो नहीं रहा है।
क्रमशः

पृष्ठ ३४ से आगे

महाराजकुमार को भेजी थी ?'' श्याम ने फिर से पूछा.

''वह बदतमीज चंदू घंटा! श्रीमती महाराज कुमार ने गुस्से से कहा'' ''मेरे पति को ऐसी वस्तु भेजने का साहस करना, केवल इसलिये कि एक समय दोनों एक साथ काम करते थे. वर्षों पहले जब मेरे पति रहस्यमय रेडियो प्रोग्राम लिखा करते थे, मैने उस घड़ी का प्लग लगा कर अलार्म चला दिया, मुझे स्वप्न में भी ख्याल नहीं था और सोचो जब अचानक वह भयानक चीख निकली तो मेरा तो हार्ट फेल होते-होते बचा, मैंने तो उसे तुरन्त ही कूड़े में रख कर कूड़ा उठाने वाले के लिये रख दिया, तुम्हें पृथ्वी के किस कौने से यह मिल गई ?''

''कूड़ा ले जाने वाले ने इसे मेरे एक मित्र को बेचा था श्याम ने उत्तर दिया ''क्या आपने उसके नीचे लिखे संदेश को देखा था ?''

''तले पर लिखा संदेश,'' महिला ने त्योरी चढ़ाकर उत्तर दिया ''मैने कोई संदेश नहीं देखा मैने तो अगले दिन ही उसे फेंक दिया था.'' उस के साथ चंदू घंटे का एक छोटा पत्र था वह भी मैंने फेंक दिया था.''

''क्या आपको ध्यान है उस पत्र में क्या लिखा था ?'' श्याम ने पूछा ''यह बहुत ही महत्व रखता है''!

''क्या लिखा था!'' ओह उसमें कुछ ऐसा लिखा था कि यदि मेरे पति उस घड़ी का अलार्म सुन उस पर ध्यान दें तो उनकी बिगड़ी किस्मत बन सकती है, कुछ बकवास, मेरे ख्याल से चंदू घंटे का मेरे **पति** से ऐसा मजाक एक भद्दी बात है, जब कि मेरे पति बीमार हैं और उन्हें बिलों से अधिक अपने स्वास्थ्य की चिन्ता है, और जबकि ये दोनों एक समय अच्छे मित्र भी थे. मुझे यह समझ नहीं आया कि चंदू हमें अपनी एक डरावनी चीख से क्यों भयभीत करना चाहता है,'' वे रुकीं और नाराज सी हुई.

''परन्तु तुम यह सब क्यों जानना चाहते हो, तुम्हें इस घड़ी में क्या दिलचस्पी है ?'' उन्होंने पूछा.



''हम उसके विषय में सब कुछ जानना चाहते हैं,'' श्याम ने उत्तर दिया, ''मि० चंदू घंटा कहीं गायब हो गये हैं और हमारा ख्याल है घड़ी इससे कुछ **सम्बन्धित** है. आपने यह तो नहीं देखा होगा, घड़ी किस स्थान से भेजी गई थी ?''

''नहीं यह तो मैने नहीं देखा, परन्तु बात कुछ अजीब सी है चंदू घंटे का गायब हो जाना, आखिर क्यों ? माफ़ करना, मुझे टेलीफ़ोन की घंटी सुनाई दे रही है और मुझे जो कुछ भी मालूम था वह मैं तुम्हें बता चुकी हूं नमस्कार!''

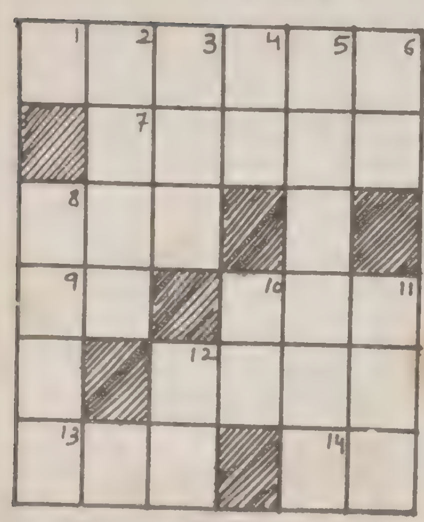
दरवाजा बन्द हो गया और श्याम हरी की ओर मुड़ा.

''देखा तुमने खोज किस प्रकार आगे बढ़ती है हरी!'' वह बोला ''हमें बहुत कुछ पता चल गया है, मैं यह तो नहीं बता सकता इस सब का क्या अर्थ है. परन्तु राजू के न होते हुए भी यह कह सकता हूं जानकारी महत्वपूर्ण है मैं यह भी कह सकता हूं कि मि० चंदू घंटे ने किसी विशेष कारण से घड़ी **मि.** महाराजा कुमार को **भेजी थी, केवल अन्तर यह रहा कि** उन्हें वह मिल नहीं पाई, वे हस्पताल में बीमार पड़े थे और उनकी **पत्नी ने** घड़ी को कूड़े के साथ फेंक दिया. हो सकता है मि. महाराज कुमार को इसका अर्थ पता चल जाता परन्तु हमारा उन से मिल पाना संभव नहीं है **इसलिये** इसका अर्थ हमें स्वयं ही ढूंढ़ना पड़ेगा।

(क्रमशः)

दीवाना वर्ग पहेली

जीतिये इनाम १०रू०



अन्तिम तिथि:— १५-५-८२

संकेत बायें से दायें

१. कभी अलग न होने वाला साथ जैसे कपड़ों में यह . . .(२, ३, १)

७. चार छटांक है न चालीस सेर लेकिन दिल में पाप नहीं है। (३, २)

८. क श्रेणी के जहाज जो पक्षी हैं। (३)

९. आंसू बहाती। (२)

१०. मुंह के एक अंग से कल मिला हो तो सफलता नहीं मिलेगी। (३)

१२. इकट्ठा करना . . .समेटना। (४)

१३. आधी ट्रैफिक पेड़ के बिचले भाग से टकरा जाये ऐ कस्ट मिलेगा। (३)

१४. रगड़ कर लगाई। (२)

ऊपर से नीचे

२. ऊपरी यह करने पर बाहर से देखने में साफ व नया नया लगेगा (२-२)

३. स्याही रखने के पात्र से डंडी हटा कर दूसरे स्थान पर लगाने पर खाने-पीने को मिल सकता है। (३)

४. जिमनास्टिक्स में दिल कहां है ? (२)

५. दक्षिणी भारत शैली में अभिवादन (६)

६. इसे लगा कर सुनो। (२)

८. एक मुस्लिम वर्ग के लिये कढाई का काम करो। (४)

१०. उल्टे टोटका करता है और है ठिगनो। (२)

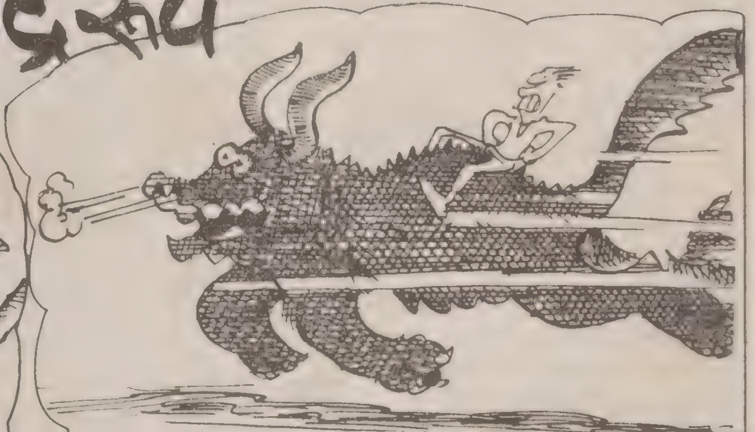
११. रुठी हुयी को खुश करने के लिये उपयुक्त हिलस्टेशन। (३)

१२. बिना ...

प्रचलित बोलों-कहावतों के रौद्र रूप



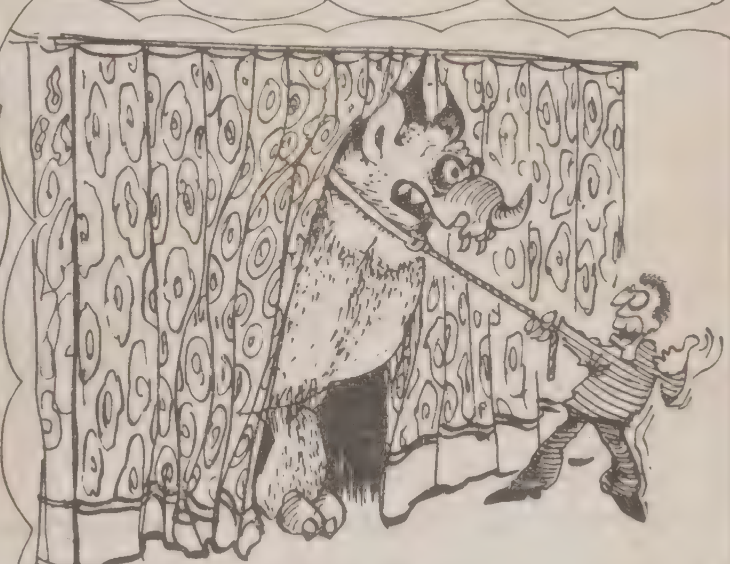
अपने विचार दूसरों के सामने रखना



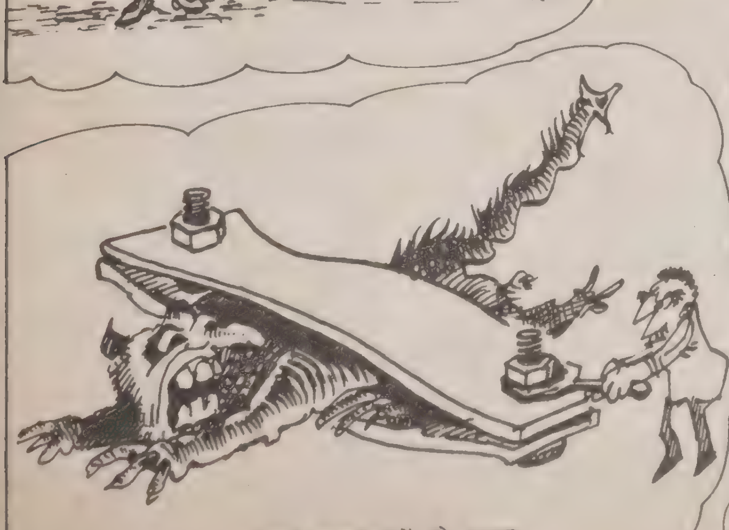
अपने हठ पर अड़े रहना



दिल का गुब्बार निकालना



पर्दे की बातें बाहर लाना



अपनी आकांक्षाओं को दबाना



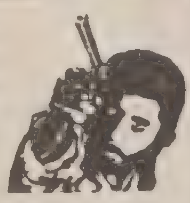
पुराने कार्यक्रम को नया रूप देना

लघु विज्ञापन

Self Protection from theives & Beasts with strong metal Folding 6 Round Automatic Pistol emitting Daziling fire with loud and thunderous sound

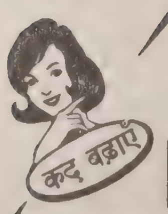
No Licence required

INDIA'S FIRST RUSSIAN MODEL TIGER ZORRO 777 6 Round Automatic Pistol



Costs Rs. 75/- only. Original leather case & 300 Bullets free Postage Rs. 10/- Extra. Extra Bullets Rs. 5/- per hundred.

EXPORT AGENCY (SD)
Mahavirganj Aligarh

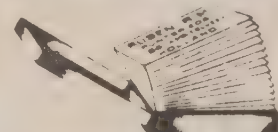


IMPROVE HEIGHT upto 3" without EXCERCISE

Consult personally or send self-addressed stamped envelope for details to :

DR. BAGGA
LAL KUAN, (Opp. Kucha Pandit)
DELHI-110006. PHONE : 262426

1000(Golden Stripped)Gummed ADDRESS LABELS



With imported technology in India. Your name and address beautifully printed on 1000 finest quality Golden stripped gumed labels Packed in attractive Carton. Free : 800 year calender. Price Rs. 25 by VPP (Post extra) GIKAY ARTS EMPORIUM, 150-Gupta Colony, Delhi-9

आज्ञा पालन

उन्होंने बेटी को
बुलाया
और समझाया,
कम से कम
अच्छे कपड़े पहनो।
और उसी दिन से
वह यों रहती है,
कहे अनुसार
कम से कम
कपड़े पहनती है॥

गतिमान

वे
गतिमान हैं
क्योंकि
वायुयान में
विराजमान हैं। राजेन्द्र चंचल

पसन्द

एक आलीशान होटल में
उन्हें ले जाकर
पूछा मैंने सादर—
"क्या पसन्द करेंगे आप
मटन, कबाब
या अन्डों की करी ?'
बोले मुसकराकर वे—
"मुझे तो पसन्द है
केवल तस्करी."

—सूर्य कुमार पाण्डेय

दीवाना

के वार्षिक सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये

चन्दे की दरें

वार्षिक	अर्द्धवार्षिक	एक प्रति
२७ रुपये	१४ रुपये	१ रुपये ५० पैसे

साधारण रुप से दीवाना की सदस्यता शुल्क ३६ रु. एवं डाक खर्च अलग से होती है। लेकिन आप अभी सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये एवं अपनी कापी अपने घर या दफ्तर में प्राप्त कीजिये।

नीचे दिये कूपन को भरिये और चन्दे की रकम के साथ हमें डाक द्वारा भेजिये। चन्दे की रकम केवल दीवाना के नाम से ही भेजें।

अपना सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजिये
सरकुलेशन मैनेजर, दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

कृपया मुझे दीवाना के वार्षिक/अर्द्ध वार्षिक ग्राहकों की सूची में सम्मिलित कर लीजिये। मैं चन्दे की रकम———— रुपये भारतीय पोस्टल आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/मनीआर्डर नं.————————से भेज रहा हूं।

नाम————————————————

पता————————————————

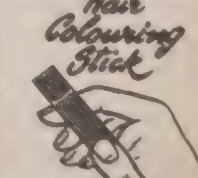
————————————शहर/जिला————————

राज्य ————————————पिन कोड ————————

WEMBLEY



"GREY-TOUCH" Hair Colouring Stick



LOOK YEARS YOUNGER

Ask for free literature

A BOON FOR THOSE WHO CAN'T WITHSTAND HAIR DYES

WEMBLEY LABORATORIES
SINGH SABHA RD., DELHI-7


संगीत की भाषा में विभिन्न लोगों के लिये
संगीत का महत्व
नेता के लिये—स्वागत का तोरणद्वार
पनवाडी के लिये—सिगरेट लगाने की रस्सी बराबर
लड़कियों के लिये—एक नया फैशन
निराशावादी के लिये मौत का सामान
प्रेमी के लिये—प्रेमिका तक पहुंचने की सीढ़ी
चमचे के लिये—चमचागीरी का साधन
भेड़ें चराने वाले के लिये—भेड़ों का बाड़ा
खेल प्रेमी के लिये—एक और खेल सुरों का



सुरेन्द्र लघुवानी, छापर, रीवा, १६ वर्ष. घूमना पढ़ना।

इन्द्र पाल सिंह २४८/C घोसी मुहल्ला, करनाल, १९ वर्ष, पढ़ना।

काली पद बशु (देहाती) स्टेशन कालौनी बरकाकाना क्वा. नं. २४१/D १८ वर्ष मित्रता

मनोज अरोड़ा, एन. सी. सेनगुप्ता भवन, तीसरी मंजिल, मानबाद, झरिया, २० वर्ष, पत्र-मित्रता।

जय कुमार जैन द्वारा बालचंद सुरेशचन्द्र जैन नवापारा राजिम (म.प्र.) २२ वर्ष, एक्टिंग करना,

नवीन निर्मल, जी. एच. पी. कालोनी, B.N. 61/390 गोखड़ रोड, बडोदरा, २१ वर्ष,

इन्द्रजीत कपूर WZ सुदर्शन पार्क, नई ११००१५, १५ वर्ष.



रवीन्द्र कुमार आमात्य ई. डी. ८३ मोती झील सचिवालय कालोनी, ऐशबाग लखनऊ (उ.प्र.)

नरेश गुलाटी 'दीपका' २४, न्यू मार्किट तिलक नगर नई दिल्ली-११००१८, १७ वर्ष

जसबिन्दर सिंह धनी अमीर पेट हैदराबाद (आ. प्र.) १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, गिटार बजाना

राजेंद्र महाशब्दे, पपड़ी कमलानगर सब्जी मंडी, दिल्ली-७, १८ वर्ष, जासूसी करना।

शिव कुमार अरोड़ा, सुरेश कुमार चम्पा लाल की हवेली, खुरजा, १८ वर्ष, टी वी देखना

सुरेन्द्र अरोड़ा, ए-३/२६ मोती नगर, नई दिल्ली-१५, १८ वर्ष, फरमाईश भेजना, क्रिकेट खेलना।

कमल नागपाल १/ रोहतास नगर, शा दिल्ली-३२, १६ वर्ष,



भगवान दास सैनी, ५३६, गली आर्य समाज, नजफगढ़, नई, दिल्ली-४३; १८ वर्ष.

लाल चन्दानी कमल न्यूशालीमार को. आ. सोसाइटी फ्लैट ए-९, इलाहाबाद, १७/वर्ष, क्रिकेट,

प्रवेश कुमार भटनागर, ११२० कायस्थबाड़ा, सिकन्द्राबाद, बुलन्दशहर, २१ वर्ष.

फिरोज जावेद, कौन्सलेंट आफ ईरान बंबई-२०, १९ वर्ष, सच्चे दोस्त की तलाश करना।

कृष्ण गोपाल अरोरा, मकान नं. ११२/A, उत्तरी गांधी कालोनी, मुजफ्फर नगर, १७ वर्ष

मामराज अग्रवाल, फुसरो बाजार गिरिडीह (बिहार), २० वर्ष, पत्र-मित्रता।

सच्चा नंद बलवानी, कार्नर, चित्रा सिनेमा के सड़क, ग्वालियर १८ वर्ष



सन्दीपन रत्नेश बर्मन, बी. 589/B, रामनगर बाँग बेगम गंज बाराबंकी (उ.प्र.). १६ वर्ष,

कृष्ण गोपाल अग्निहोत्री, मौहल्ला पक्का कोट, डाक-काशीपुर (जि. नैनीताल, उ.प्र. २३ वर्ष

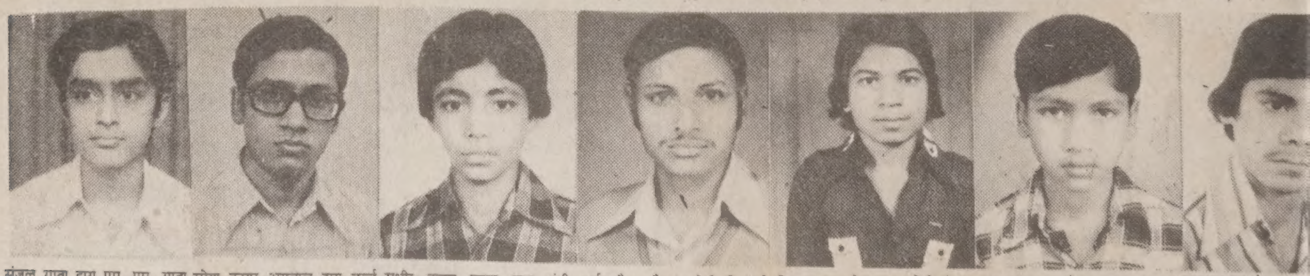
सतीश कुमार नरूला, मकान नं. 2A/96B, फरीदाबाद. १९ वर्ष, फोटोग्राफी।

विजयकुमार, सेन्ट्रल रेलवे क्वाटर नं. J/16/A, आगरा कैन्ट, १७ वर्ष, गाने गाना।

सुरेन्द्र कुमार शर्मा, शर्मा न्यूज एजेन्सी, बाजपुर रोड, काशीपुर, नैनीताल, १९ वर्ष, घूमना

माधव प्रसाद, सिल्लेबाड़ा, जि. नागपुर, महाराष्ट्र, १९ वर्ष, दीवाना। पढ़ना.

अजीत कुमार सिंह १० प्र. सिंह, एस. डी. ओ. (बैशाली) १५ वर्ष



संजल गुप्ता द्वारा एम. एम. गुप्ता उत्तर चक्रधर, नगर रायगढ़ (म.प्र.) ४९६००१, १६ वर्ष

सुरेश कुमार अग्रवाल द्वारा वर्ल्ड बेलफेयर सोसाइटी १२/२ जी. के. रोड, कलकत्ता-४६, २० वर्ष

सुधीर कुमार, पुराना दाना मंडी, महेश्वरी स्ट्रीट, कोटकपूरा, १४ वर्ष, टिकट संग्रह।

दर्शन जैन, जैन कालोनी, शिवपुरी रोड लुधियाना, २२ वर्ष, एकान्त में बैठ कर सोचना।

दिपक कुमार हेलपटपुर मोदी नं २ कामठी, नागपुर, १६ वर्ष, जूडो कराटे।

मुकेश कुमार जैन, कुन्दन भवन छावनी, चौराहा कोटा (राजस्थान) दीवाना पढ़ना।

सत्यनारायण पंवार द्वारा पंवार सोनगिरी कुआ ज.) १८ वर्ष, फरमाइ



मनोज शर्मा ५०८८, मेन बाजार पहाड़ गंज नई दिल्ली-५५, २० वर्ष, दोस्ती से धोखा खाना।

अमरनीत कुमार १८१८ कजली गेट, करतारपुर (जालन्धर) पंजाब. २१ वर्ष, अखबार पढ़ना, फरमाईशी

रवीन्द्र कुमार द्वारा श्री मदन मोहन लाल. राजो की गली कैराना (मु.न.) १५ वर्ष, कक्षा में प्रथम आना, पत्र-मित्रता।

सतीश सेठी, मकान नं. ८८१/४६ गलीनं. 1प्रताप नगर, २० वर्ष

हरीसिंह I-१६१५००, बापानगर, मिलट्रीरोड, करौलबाग, नई दिल्ली, २१ वर्ष, क्रिकेट खेलना.

हमारा पता: दीवाना फ्रैंड्स क्लब ८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२.
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ——————————

पता ——————————

आयु ————— शौक —————

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

आपको पता लगता है कि आप गंजे हैं जब...



जब तेज आंधी चल चुकने के बाद आपको अपना सिर जैसे का तैसा मिलता है जब कि दूसरे बिखरे बालों के साथ पागल या भूत से नजर आते हैं।



जब आप अपने ड्रेसिंग टेबल पर कंघी देख कर पत्नी को डांट सकते हैं "फालतू चीजें मेरी मेज पर मत रखा करो।"



जब धूप में बगैर गॉगल पहने कोई आपकी ओर देख नहीं पाता। खोपड़ी स्टेनलैस स्टील के कटोरे की तरह चकमकाती है।



जब पता लगता है कि ...आपके मोहल्ले का नाई केवल आपका नाम नहीं जानता।



जब मुंह धोने वाले वाशबेसिन पर रखी साबुन की टिकिया जल्दी-जल्दी खत्म होने लगती है। माथे के ऊपर बाल न होने के कारण धोने वाले मुंह का क्षेत्रफल बढ़ जाता है।



जब स्कूटर रोकने पर आप सिर पर रखा हैलमैट आपने साथियों में सबसे बाद में उतारते हैं। गंजापन छिपाने का अवसर अधिक से अधिक उपयोग करने की आदत पड़ जाती है।

R.N. 16596/65 Regd. No. D(DN)-275

